सच्चा धन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली ११००४८

TRUE RICHES

By SUNNY DAVID

मुद्रक
प्रिंट इन्डिया
मायापुरी, नई दिल्ली

परिचय

जीवन में अनेकों ऐसी वस्तुएं हैं जो हमे महत्वपूर्ण दिखाई देती हैं, परन्तु जितना भी अधिक कोई इस पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करता है उतना ही अधिक वह अनुभव करने लगता है कि ये सब वस्तुएं महत्व-रहित हैं। केवल इतना ही नहीं, अनेकों वस्तुएं तो ऐसी हैं जिनकी हमें कोई आवश्यकता ही नहीं है। यह भी कहा जा सकता है कि ये वस्तुएं खाली तथा खोखली हैं तथा इनसे कोई संतोष नहीं मिलता। दुख की बात तो यह है कि हमने इस पाठ को अपने जीवन के आरम्भ में नही सीखा। परन्तु कभी भी न सीखने से अच्छा तो यह है कि हमने इसे सीखा, चाहे देर से ही सीखा हो ।

यदि संसार की भौतिक वस्तुएं इस बात का उत्तर नही हैं तो फिर वास्तव में इसका उत्तर क्या है? बाइबल शिक्षा देती है कि हम शारीरिक और आत्मिक रुप से परमेश्वर की रचना हैं। हमारे जीवनों का सबसे आवश्यक भाग है हमारी आत्मा जो हमारी शारीरिक देहों में वास करती है। बाइबल हमें यह भी बताती है कि हमारी आत्मा सदाकाल तक अमर रहेगी। यदि यह बात सत्य है तो हमें इसके विषय में सोचना चाहिए तथा अपने को तैयार करना चाहिए क्योंकि एक दिन ऐसा आएगा कि हमारी आत्मा परमेश्वर के पास वापस लौट जाएगी क्योंकि उसी ने इसे दिया है।

इन सब बातों के साथ एक सुन्दर बात यह है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को क्रूस पर मरने के लिए भेजा था ताकि इस बलिदान के द्वारा हमें पापों से क्षमा मिल सके तथा हमें उद्धार प्राप्त हो सके। बाइबल का नया-नियम हमें बताता है कि किस प्रकार से हम अपनी आत्माओं को पाप द्वारा नाश होने से बचा सकते हैं।

हमारे रेडियो कार्यक्रम के वक्ता श्री सनी डेविड ने इन्ही सत्यों का वर्णन बड़ी ही अच्छी तरह से किया है तथा इनके द्वारा हमें उत्साहित किया है ताकि हम इनमें विश्वास करें और इनको मानें। यदि हम ऐसा करेंगे तो परमेश्वर ने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह हमें उद्धार और आनेवाले जीवन की आशा देगा।

मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहूंगा कि आप इन प्रवचनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपने मित्रों को भी इसके विषय में बताईये। यदि आप ऐसा करेंगे तो मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप इससे प्रसन्नता का अनुभव करेंगे ।

जे0 सी0 चोट, मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

विषय सूची

		पृष्ठ
१.	क्या शरीर आत्मा से बढ़कर है?	6
२.	क्या आत्मा शरीर से बढ़कर नहीं?	10
३.	सो यदि कोई मसीह में है	14
४.	सो अब जो मसीह यीशु में हैं	18
५.	न्याय और प्रेम	22
६.	सच्चा प्रेम	26
७.	आह, वह प्यारी सलीब	30
८.	क्रूस की मौत	34
९.	क्रूस का संदेश	38
१०.	यीशु स्वर्ग का मार्ग है	42
११.	यीशु सच्चाई है	46
१२.	यीशु जीवन है	51

क्या शरीर आत्मा से बढ़कर है?

मान लीजिये, अगर आप को कोई एक लाख रुपए दे दे, तो आप उस का क्या करेंगे? शायद आप उसे बैंक में डाल देंगे, या शायद उस से आप अपने और अपने परिवार के लिये कुछ अच्छी-अच्छी चीजें खरीदेंगें। आप चाहे कोई भी हों, अमीर हों या गरीब हों, पढ़े-लिखे हों या अनपढ़ हों - आप उस रुपये को संभालकर रखेंगे, क्योंकि आप उसके महत्व को पहचानते हैं। पर मान लीजिए, उसी एक लाख रुपए को एक थैली में रखकर एक सुअर की गरदन में लटका दिया जाए, तो वह सुअर क्या करेगा ? मैं आपको बताता हूं कि वह सूअर क्या करेगा। जितनी भी जल्दी उस पशु को अवसर मिलेगा वह उस थैली समेत जाकर कीचड़ में लोट लगाएगा। क्यों? क्योंकि वह उस रुपये की कीमत को नहीं पहचानता, वह उसके महत्व को नहीं जानता। पर अगर हम यह भी मान लें, कि किसी आदमी को एक लाख रुपया मिल जाए, पर वह उस रुपए को लेकर फाड़ दे या उसे जला दे। तो हम एक ऐसे इंसान को क्या कहेंगे? निश्चय ही, हम कहेंगें कि वह आदमी पागल है, वह अपने होश-ओ-हवास में नहीं है, वह रुपए के महत्व को नहीं जानता है।

पर आज मैं आपको एक ऐसी कीमती चीज के बारे में बताना चाहता हूं, जिसका मूल्य रुपयों से नहीं आंका जा सकता, एक ऐसी बहूमूल्य वस्तु, जो जगत के सारे धन-दौलत से भी अधिक मूल्यवान है। और एक बड़ी ही खास बात यह है, कि वह बेशकीमती चीज हम में से हर एक को दी गई है, उसे परमेश्वर ने हमें दिया है, और वह चीज है हमारी आत्मा। लेकिन हम में से कितने ऐसे हैं, जो उसकी कीमत को वास्तव में पहचानते हैं, हम में से कितने हैं जो उसके विशाल महत्व को जानते हैं?

अकसर कुछ लोग बड़े-बड़े दाम देकर कुछ पुरानी चीज़ों को खरीदकर उनका संग्रह करते हैं। लाखों रुपए देकर वे किसी पुरानी कला-कृत्ति या तस्वीर को खरीदते हैं, जिसे सैकड़ों वर्ष पूर्व किसी प्रसिद्ध कलाकार ने बनाया था। वे उस पर गर्व करते हैं, कि उनके पास एक महान कलाकार की एक पुरानी मूरत या तस्वीर है। पर वे इस बात को नहीं देख पाते कि उनके पास जो अनन्त आत्मा है, उस से बड़ी और विशाल और प्राचीन कोई अन्य वस्तु इस पृथ्वी पर नहीं है। उसे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने स्वयं जगत के आरम्भ में बनाया था। (उत्पत्ती १:२७) और उसका मूल्य ऐसा विशाल है, कि परमेश्वर के पुत्र ने स्वर्ग से पृथ्वी पर आकर लोगों से कहा था कि, यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करे और अपनी आत्मा की हानि उठाए, तो उसे कुछ लाभ नहीं होगा? (मरकुस ८:३६)। इस ज़मीन पर चाहे आप मखमल के कपड़े पहनते हों, और महलों में रहते हों, पर अगर आप परमेश्वर की इच्छा को मानकर और उस पर चलकर अपने पापों से मुक्ति नहीं पा लेंगे, तो पल भर में जिस समय आपकी आत्मा आपके शरीर को छोड़कर अलग हो जाएगी आप नरक में हमेशा के लिये अपनी आत्मा की हानि उठांएगे। पर, दूसरी ओर, अगर आप चीथड़ों में लिपटे एक झोंपड़ी में रहते हों, पर यदि आपने परमेश्वर की इच्छा को मान लिया है, और अगर आप उसकी मरज़ी पर चल रहे हैं, तो आप को यह मालूम होना चाहिए कि जिस वक्त आप की आत्मा आप के शरीर को छोड़कर अलग हो जाएगी आप परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करके उसके साथ हमेशा की ज़िंदगी पाएंगे। कहां हैं आज आप आत्मिक दृष्टिकोण से? क्या आप अपना जीवन सांसारिक बातों में व्यतीत कर रहे हैं, या परमेश्वर की इच्छा पर चलकर व्यतीत कर रहे हैं?

आज हम एक ऐसे युग में रहते हैं जिसमें लोग अपनी सेहत का बड़ा ही अधिक ध्यान रखने लगे हैं। और इसका कारण शायद आज की बढ़ती हुई बीमारियाँ हो सकती हैं। आज के ज़माने में हर एक चीज़ में मिलावट है, यहां तक कि हवा और पानी में भी मिलावट हैं। और इसीलिये आज बीमारियां भी अधिक हैं। सो लोग आज अपनी सेहत की तरफ कुछ अधिक ध्यान देने लगे हैं। बहुतेरे लोग सुबह-सवेरे दौड़ लगाते हैं। कुछ योगा और शारीरिक व्यायाम करके अपने व्यक्तित्व को सुंदर और आकर्षक बनाना चाहते हैं। जबकि इसमें

कोई बुराई नहीं है, पर सवाल हमारे सामने यह है कि आज हम अपनी आत्मा के बारे में कितने चिन्तित हैं? अपनी आत्मा को बचाने के लिये हम क्या कर रहे हैं? हम सब यह जानते हैं कि हम अपने शरीर को बचाकर भी वास्तव में उसे नहीं बचा सकते, क्योंकि एक न एक दिन तो उसे मिट्टी में मिलना ही है, चाहे वह कितना भी सुंदर और आकर्षक और तंदरुस्त क्यों न हो। पर तौभी रात-दिन हमें उसी की चिन्ता रहती हैं। जब कि सच्चाई यह है, कि मनुष्य की आत्मा अमर और अनन्त है। उसे कोई नहीं मिटा सकता। वह हमेशा तक वर्तमान रहेगी। बीमारी और दुर्घटनाएं इंसान के शरीर को नाश कर सकती हैं, पर उसकी आत्मा को नाश नहीं कर सकती। पवित्र बाइबल कहती है, कि मृत्यु के बाद मनुष्य की देह तो मिट्टी में मिल जाएगी पर उसकी आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाएगी। (सभोपदेशक १२:७) तौभी हकीकत यह है, कि हर एक इंसान को आत्मा से भी ज्यादा अपनी देह की ही चिन्ता रहती है।

पवित्र बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर का पुत्र, यीशु, स्वर्ग को छोड़कर इस पृथ्वी पर आया था। पर क्यों? यद्यपि वह परमेश्वर के स्वरुप में था, तौभी वह एक इंसान बना था। उस ने ज़मीन पर दुख उठाए थे। उसने अपने आप को मौत के हवाले कर दिया था। और परमेश्वर की इच्छा से उसने पृथ्वी पर एक ऐसी मौत का सामना किया था जो बड़ी ही भयानक और दर्दनाक थी। वह निष्पाप और निरापराध होते हुए भी पापियों और अपराधियों के लिये क्रूस पर मारा गया था। उसने कहा था, कि मैं इसलिये आया हूं कि तुम जीवन पाओ और बहुतायत से पाओ। (यूहन्ना १०:१०)। उसने कहा था, कि मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और बचाने के लिये आया हूं। पर क्या वह लोगों को शारीरिक जीवन देने के लिये आया था? क्या वह मनुष्य के शरीर को बचाने के लिये आया था? नहीं। बिल्कुल नहीं। परन्तु वह लोगों को आत्मिक जीवन देने के लिये आया था; वह हमारी आत्माओं को बचाने के लिये आया था। क्योंकि परमेश्वर हमारी आत्मा के महत्व को जानता है। और वह नहीं चाहता कि कोई भी आत्मा पाप के कारण नरक में हमेशा के लिये नाश हो। परंतु उसकी इच्छा यह है कि हम में से हर एक अपना-अपना मन फिराकर उसके पास वापस आ जाए और उसकी मर्ज़ी पर चलकर अपने पापों से मुक्ति पा ले।

इस जमीन पर आपने बहुतेरे काम किए हैं, और भविष्य में अनेकों अन्य कामों को भी करने की आप योजना बना रहे हैं। पर इससे बड़ा, और जरुरी, और महत्वपूर्ण दूसरा और कोई काम आप इस पृथ्वी पर नहीं कर सकते, कि आप आज पाप से अपना मन फिरा लें; और अपने सारे मन से उस प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लें आएं जिसने अपनी मौत के द्वारा आप के पापों का प्रायश्चित किया था। अपने जीवन को उसे सौप दें, और उस की आज्ञा को मानकर अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लें। जैसे कि बाइबल हमें सिखाती है। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)। निश्चय ही, इस से बड़ा और कोई दूसरा काम आप नहीं कर सकते। परमेश्वर की बाइबल कहती है कि संसार और उसके काम और उसकी अभिलाषाएं, सब एक दिन मिट जाएंगे, पर जो इंसान परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह हमेशा बना रहेगा। (१ यूहन्ना २:१७; २ पतरस ३:१०-१३)। परमेश्वर ने आपको और मुझे अपने साथ रहने के लिये बनाया है। पर हम अपने पापों को लेकर उसके पास नहीं जा सकते। क्योंकि वह पवित्र है। सो उसने पाप से छुटकारा पाने के लिये हमें एक उपाय बताया है - उसका पुत्र यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित है। उसमें होकर हम अपने पापों से छुटकारा पा लेते हैं। और इस प्रकार अपने परमेश्वर के पास जाकर उसके साथ हमेशा के लिये रहने को तैयार हो जाते हैं। सो अपने शरीर की चिन्ता करना छोड़ दें, बल्कि अपनी आत्मा की चिन्ता करें। उद्धारकर्त्ता यीशु के पास आएं।

क्या आत्मा शरीर से बढ़कर नहीं?

प्रभु यीशु मसीह ने अपने पहाड़ी उपदेश में अपने सुननेवालों से कहा था, कि "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, व एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा;" "तुम" यीशु ने कहा था, "परमेश्वर और धन दोंनों की सेवा नहीं कर सकते"। इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगें? और क्या पीएंगें? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहनेंगें? क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को देखो, वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते हैं और न कातते हैं तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहने हुए न था। इसलिये, जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्प-विश्वासियो, तुम को वह क्योंकर न पहिनाएगा?" "इसलिये पहले तुम उस के राज्य और धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती ६:२४-३०, ३३)।

आज हम एक ऐसे संसार में जीते हैं, जिस में हर जगह शरीर और शारीरिक वस्तुओं पर बड़ा ही अधिक ध्यान दिया जाता है। और यहां तक चिन्तित हो गया है आज इंसान अपने शरीर के लिये कि वह उसके आगे अपनी

आत्मा को कुछ भी नहीं समझता। मनुष्य आज अपने व्यवहार से और अपने चाल-चलन से यह प्रकट करता है, कि उसका सारा जीवन केवल शरीर ही है। तौभी, परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक में हमें यह चेतावनी देता है, कि "हर एक प्राणी घास की तरह है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल की तरह है।" और एक दिन ऐसा आएगा जबकि घास सूख जाएगी और फूल भी झड़ जाएगा। (१ पतरस १:२४)।

इसलिये, बाइबल में लिखा है, कि, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो" और "यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और जीविका का घमण्ड, वह परमेश्वर की ओर से नहीं, परंतु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (१ यूहन्ना २:१५-१७)।

संसार से प्रेम रखने का मतलब है, संसार को महत्व देना, और उसे प्रसन्न करना। पर कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, प्रभु यीशु ने कहा था। हम संसार और परमेश्वर दोनों की सेवा एक ही समय में नहीं कर सकते। यदि हम अपने जीवनों में संसार और सांसारिक वस्तुओं को महत्वपूर्ण मानते हैं, तो परमेश्वर का महत्व हमारे जीवनों में कम हो जाता है; तब संसार का दर्जा पहला और परमेश्वर का दर्जा दूसरा हो जाता है। हम संसार और परमेश्वर दोनों की बातें एक ही समय में नहीं मान सकते। हम संसार और परमेश्वर दोनों को एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते। क्योंकि संसार के मार्ग पर चलकर हम परमेश्वर को खुश नहीं कर सकते, और परमेश्वर के मार्ग पर चलकर हम संसार को प्रसन्न नहीं कर सकते। और यही बात शरीर और आत्मा के संबंध में भी है। यदि हमारे जीवनों में शरीर का महत्व पहला है, तो आत्मा का महत्व घट जाता है। और अगर हम अपनी आत्मा को शरीर से अधिक महत्व देते हैं तो फिर शरीर का महत्व कम हो जाता है। पर सच्चाई हकीकत में यह है कि हम में से ज्यादातर लोग, और

लगभग सभी लोग अपनी आत्मा को तो कूड़े-करकट के समान समझते हैं, पर अपने शरीर को एक मूल्यवान वस्तु की तरह संभालकर रखते हैं। तौभी, हमारा सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर अपनी बाइबल में हम मे से हर एक से यह कहता है, कि मृत्यु के समय हम सब की देह मिट्टी में मिल जाएगी, पर हमारी आत्माएं अपने परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देने को उसके पास चली जाएंगी। (सभोपदेशक १२:७)।

मित्रो, स्वर्ग और नरक परमेश्वर ने हमारे शरीरों के लिये नहीं बनाएं हैं। पर स्वर्ग और नरक दो आत्मिक स्थान हैं। और जो वस्तुएं आत्मिक हैं वे अनन्त हैं, अर्थात् उनका अस्तित्व कभी नहीं मिटेगा। और जो वस्तुएं आत्मिक हैं उन्हें हम अपनी शारीरिक आंखों से नहीं देख सकते। यही कारण है कि हम अपनी आत्मा को नही देख सकते, क्योंकि वह आत्मिक है। पर हम अपने शरीर को देख सकते हैं, क्योंकि वह शारीरिक है। और जो वस्तु शारीरिक है वह नाशमान है। पर जो वस्तु आत्मिक है वह अमर है। इसीलिये प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, पर उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन के लिये आवश्यक है। (यूहन्ना ६:२७)।

आपने अपने शारीरिक जीवन के लिये शायद कुछ धन इकट्ठा कर लिया होगा। आपने अपने शारीरिक जीवन के लिये शायद एक घर भी बनवा लिया होगा। और आपने अपने शारीरिक जीवन के भविष्य के लिये शायद किसी प्रकार की सुरक्षा का प्रबन्ध भी कर लिया होगा। पर आप ने अपनी आत्मा के लिये क्या किया है? जब आप इस संसार से हमेशा के लिये चले जाएंगे, तो उस आत्मिक संसार में पहुंचकर आप किस जगह रहेंगे? क्या वहां परमेश्वर अपने स्वर्ग में आप को स्वीकार करेगा? सिर्फ यह कह देने से कि किसी का "स्वर्गवास" हो गया है, कोई स्वर्ग में नहीं पहुंच जाता । यह एक धोखा है। यह एक मन को बहलाने-वाली कहावत है। पर स्वर्ग में केवल वह इंसान जाता है, जिसके पाप परमेश्वर क्षमा करता है। और परमेश्वर उस मनुष्य के पाप क्षमा करता है, जो उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास लाता है। क्योंकि यीशु मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि जो मुझ पर

विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, पर जो विश्वास नहीं लाएगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६:१६)।

जब हमें कोई शारीरिक रोग लग जाता है, तो उससे छुटकारा पाने के लिये हम सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं, क्योंकि हमें अपने शरीर से मोह है। पर क्या हमारी आत्मा शरीर से बढ़कर नहीं है? अगर हम में जरा सी भी अक्ल है, तो हम इस बात को देख सकते हैं, और परमेश्वर की आज्ञा को मानकर अपनी आत्मा को नरक में जाने से बचाने के लिये हम कोई देरी नहीं करेंगे। जबकि परमेश्वर हमारी आत्माओं को बचाने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ सकता है, तो क्या हम उसके बलिदान को व्यर्थ ठहराएंगें?

सो यदि कोई मसीह में है

अब मैं आप के सामने इस महत्वपूर्ण बात को रखना चाहता हूं, कि बाइबल में लिखा है कि "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई हैं।" (२ कुरिन्थियों ५:१७)।

जब आप बाजार से कोई नई चीज़ खरीदकर लाते हैं तो आप उसे अच्छी तरह देख-भालकर खरीदते हैं। आप कोई टूटी-फूटी फटी-पुरानी और गंदी चीज़ नहीं खरीदकर लाते हैं। ऐसे ही जब दिन-भर काम करके आप के हाथ गंदे हो जाते हैं तो आप उन्हें धोना चाहते हैं, क्योंकि गंदे हाथ हमें अच्छे नहीं लगते हैं । और जब हमारे कपड़े गंदे हो जाते हैं, तो हम उन्हें फिर से धोकर साफ़ करते हैं, और फिर उन्हें पहनते हैं। और मान लीजिए, यदि हमें एक-दो दिन की कोई लंबी यात्रा करनी पड़ जाए, तो अपने सफ़र के अंत में सबसे पहला काम हम यही करते हैं कि हम नहा-धोकर साफ़-सुथरे होते हैं और तब हम कोई और काम करते हैं। यानि मेरे कहने का मतलब यह है, कि शारीरिक दृष्टिकोण से हम हर एक बात में सफ़ाई पर बड़ा ही अधिक ध्यान देते हैं। घरों में औरतें सुबह से शाम तक सफ़ाई करने में लगी रहती हैं। घर की चीज़ों की सफ़ाई होती है, कपड़ों की सफ़ाई होती है, बरतनों की सफ़ाई होती है - क्योंकि हमें गंदी चीज़ें अच्छी नहीं लगती हैं। क्या कभी आपने इस बात की कल्पना करके सोचा है, कि दुनिया में सफ़ाई पर रोज़ाना कितना अधिक साबुन और पानी खर्च होता होगा? वास्तव में इसकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते ।

पर, अब मैं आप के सामने एक बड़ा ही अहम सवाल रखने जा रहा हूं, और वह सवाल यह है, कि मान लीजिए, कि अगर आपका शरीर अन्दर होता और आपकी आत्मा बाहर होती, तो आप कितने साफ़ लगते? मान लीजिए, कि

आप का बाहरी इंसान अन्दर होता और आपका अन्दरुनी इंसान बाहर होता तो आज आप कितने साफ़ दिखते? क्या कभी आप ने अपने बारें में इस प्रश्न पर विचार करके देखा है?

प्रभु यीशु जब इस पृथ्वी पर था तो वह यहूदियों के बीच में परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता का प्रचार किया करता था। उस समय शास्त्री और फ़रीसी यहूदियों के धार्मिक अगुवे हुआ करते थे। परन्तु प्रभु उन्हें बाहर और भीतर से बड़ी ही अच्छी तरह से जानता था। एक बार उन्हें संबोधित करके प्रभु ने इस प्रकार कहा था, "हे कपटी शास्त्रियो, और फ़रीसियो, तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो मांजते हो, परन्तु वे भीतर अंधेर असंयम से भरे हुए हैं । हे अंधे फ़रीसी, पहले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों। हे कपटी शास्त्रियों और फ़रीसियो, तुम पर हाय: तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो, जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परंतु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिन्ता से भरी हैं। इसी तरह से तुम भी ऊपर से तो मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परंतु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।" (मत्ती २३:२५-२८)।

मान लीजिए, अगर आज आप को प्रभु के न्याय आसन के सामने खड़ा होना पड़ जाए तो आप उसके सामने कैसे लगेंगे? क्या आप अंदर से भी उतने ही साफ़ और स्वच्छ लगेंगे जितने की आप बाहर से लगते हैं? आप जानते हैं, और आप समझते हैं कि मैं यहां आपको क्या बताने की कोशिश कर रहा हूं। मैं आपको यह दिखाने का प्रयत्न कर रहा हूं कि इंसान को अपने जिस्म की ऊपरी सफ़ाई की कितनी अधिक चिन्ता रहती है। कपड़े गंदे होते ही हम उन्हें बदलकर दूसरे पहन लेते हैं। हाथ गंदे होते ही हम उन्हें धोना चाहते हैं। और शरीर से दुर्गंध आते ही हम नहाने चले जाते हैं। पर अपनी आत्मा की शुद्धता की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। प्रत्येक दिन में मनुष्य न जाने कितने पाप करता है। जितने भी बुरे विचार उसके मन में आते हैं वे सब उसकी आत्मा को गंदा करते हैं। मनुष्यों को संबोधित करके एक जगह बाइबल कहती है कि वे सब के सब पाप के वश में हैं और उनमें कोई भी धर्मी नहीं है। (रोमियों ३:९-१०) । सो इस से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मनुष्य की आत्मा पाप और अधर्म से मैली है। पर क्या हम इसके बारे में कभी सोचते हैं?

शरीर, जो कि एक दिन अवश्य ही मिट्टी में मिल जाएगा, उसे हम रोज़ाना पानी और साबुन से साफ़ करते हैं। पर आत्मा, जिस ने हमेशा वर्तमान रहना है उस पर हम रोज़ाना गंदगी और मैल को इकट्ठा करे जाते हैं। बाइबल कहती है, कि मृत्यु के समय मनुष्य का शरीर तो मिट्टी में मिल जाएगा, पर उसकी आत्मा परमेश्वर के पास चली जाएगी। (सभोपदेशक १२:७)। किन्तु जब आपकी आत्मा परमेश्वर के पास जाएगी, तो क्या उस समय वह साफ़ होगी या गंदी होगी? क्या हमें गंदी और मैली-कुचैली वस्तुएं पसन्द हैं? क्या हम सड़ी-गली चीज़ों को खा लेते हैं? जब हम इंसान होकर अच्छी और बुरी चीज़ों के बीच में फ़र्क को महसूस कर लेते हैं, तो क्या परमेश्वर जिसने इंसान को बनाया है, ऐसा नहीं कर सकता? यह सोचना गलत, निराधार, और बेबुनियाद है कि परमेश्वर इतना प्रेमी है, कि वह सबको अपने स्वर्ग में स्वीकार कर लेगा। परमेश्वर प्रेमी ज़रुर है, लेकिन वह इंसान से प्रेम करता है, वह पाप से प्रेम नहीं करता है । अगर इंसान परमेश्वर से दूर है। तो पाप के ही कारण दूर है । और यदि मनुष्य परमेश्वर से हमेशा तक दूर रहेगा तो वह अपने पाप के ही कारण उस से दूर रहेगा। परमेश्वर मनुष्य से घृणा नहीं करता, लेकिन वह पाप से घृणा करता है। वह प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है, परन्तु वह हर एक पाप से घृणा करता है।

कहा जाता है, कि परमेश्वर सब जगह है। अर्थात् वह कोई ऐसी चीज़ नहीं है, वह कोई इंसान नहीं है जिसे किसी जगह बन्द किया जा सकता है, या जो एक समय में एक ही स्थान पर पाया जा सकता है। परमेश्वर आत्मा है; वह परम-आत्मा है, और वह सब जगह वर्तमान है । लेकिन एक जगह ऐसी है, जहां परमेश्वर नहीं है, और जहां परमेश्वर कभी भी नहीं होगा - और वह जगह है "नरक"। बाइबल कहती है, कि नरक वह जगह है जहां सारे अधर्मी अपने-अपने पापों का दण्ड पाने के लिए हमेशा के लिये प्रवेश करेंगे। और, बाइबल कहती है, कि नरक आग की एक ऐसी झील है जो कभी बुझती नहीं और जहां हमेशा का रोना और पीड़ाओं के कारण दांतों का पीसना होगा। परन्तु कोई भी मनुष्य नरक में परमेश्वर की इच्छा से नहीं जाएगा। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा तो यह है कि सब लोग अपने-अपने पापों से अपना मन फिरा लें, और उसके मार्ग पर चलकर अपने पापों से छुटकारा पा लें, ताकि वे उसके पास जाकर उसके स्वर्ग में उसके साथ हमेशा की ज़िंदगी पाएं। लेकिन

इंसान परमेश्वर के पास जाने के योग्य कैसे बन सकता है? वह पवित्र और धर्मी किस प्रकार बन सकता है? अपने खुद के धर्म के कामों से इंसान कभी भी अपने पापों से छुटकारा नहीं पा सकता। मनुष्य का उद्धार केवल परमेश्वर के प्रेम से ही संभव है; केवल उसके अनुग्रह से ही इंसान उसके स्वर्ग में जाने के योग्य बन सकता है। इसीलिये बाइबल में हमें यह सुसमाचार मिलता है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नरक में नाश न हो परन्तु स्वर्ग में हमेशा की जिन्दगी पाए। (यूहन्ना ३:१६)।

यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित है। वह हमारे लिये स्वर्ग में जाने का परमेश्वर का मार्ग है। उसे परमेश्वर ने हमारे लिये दे दिया है, ताकि उसके द्वारा हम अपने अधर्म के कामों के दण्ड से बचकर स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएं। इसीलिए बाइबल कहती है, कि यदि कोई मसीह में है तो वह एक नई सृष्टि है। क्योंकि मसीह में आकर हम अपने पापों से धुलकर साफ हो जाते हैं। जो खून उस ने पापियों के लिये क्रूस पर से बहाया था, वह हमें हमारे हर एक पाप से उस समय शुद्ध कर देता है, जब हम उस में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर उसके भीतर आ जाते हैं। क्या आप यीशु मसीह में हैं? अगर आप अपने जीवन में सच्चा आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं, और इस जीवन के बाद हमेशा परमेश्वर के साथ रहना चाहते हैं, तो आपको प्रभु यीशु मसीह की आवश्यकता है। क्योंकि उस में आप एक नई सृष्टि बन जाएंगे ; आपका सारा जीवन बदल जाएगा ; और आप परमेश्वर के पास जाने के योग्य बन जाएंगे।

सो अब जो मसीह यीशु में हैं

प्रभु का धन्यवाद हो कि एक बार फिर से उसके सामर्थपूर्ण वचन को लेकर मैं आपके सामने आया हूं। पवित्र बाइबल में लिखा है: "सो अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।" (रोमियों ८:१)। यहां पर हमारा ध्यान विशेष रुप से दो खास बातों के ऊपर दिलाया गया है : एक तो यह कि जो लोग यीशु मसीह के भीतर हैं, यानि जो उसमें विश्वास रखते हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी। और दूसरी बात यहां से हम यह देखते हैं, कि जो लोग मसीह यीशु में हैं वे अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं चलते हैं, पर वे आत्मा, अर्थात परम-आत्मा की शिक्षा के अनुसार चलते हैं। परन्तु, सबसे पहले आज हम इस बात पर विचार करेंगे कि जो लोग यीशु मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा क्यों नहीं होगी?

बाइबल के अनुसार, जो लोग यीशु मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा इसलिये नहीं होगी, क्योंकि उन के बदले में यीशु उनका दण्ड प्राप्त कर चुका है। दण्ड का कारण है पाप। और बाइबल कहती है, कि सब मनुष्यों ने पाप किया है और इसलिये सब के सब परमेश्वर से अलग हैं। जिस परमेश्वर ने इंसान को बनाया है, उसी ने यह भी निश्चित किया है कि हर एक इन्सान एक बार मरेगा और फिर वह परमेश्वर के न्याय का सामना करेगा। (इब्रानियों ९:२७) बाइबल हमें स्वर्ग और नरक के बारें में भी बताती है। बाइबल कहती है, कि स्वर्ग वह आत्मिक स्थान है जहां परमेश्वर है, और नरक वह आत्मिक स्थान है जहां परमेश्वर नहीं है। स्वर्ग वह जगह है जहां हमेशा उजाला ही रहेगा, और नरक वह स्थान है जहां हमेशा का अंधकार होगा। स्वर्ग में अनन्त

आनन्द होगा, और नरक में पीड़ाओं का कभी अन्त नहीं होगा। और प्रभु यीशु ने कहा था, कि धर्मी नरक में प्रवेश करेंगे। नरक एक ऐसा पीड़ाजनक स्थान है जिसके बारे में यीशु ने कहा था, कि वहां हमेशा का रोना और दांतों का पीसना होगा । नरक उसी तरह से एक आत्मिक स्थान है, जैसे कि स्वर्ग एक आत्मिक स्थान है; और जैसे कि मैंने कहा, कि स्वर्ग वह जगह है, जहां परमेश्वर है, और नरक वह स्थान है जहां परमेश्वर नहीं है। इसलिये परमेश्वर के पास जाना स्वर्ग में जाना है और स्वर्ग में जाना परमेश्वर के पास जाना है । लेकिन परमेश्वर पवित्र है, धर्मी है, और निष्पाप है। और मनुष्य? मनुष्य तो अपवित्र, अधर्मी और पापी है। इस कारण, कोई भी मनुष्य परमेश्वर के पास न जाकर नरक में जाएगा। और प्रत्येक मनुष्य जाएगा, क्योंकि प्रत्येक के लिये एक बार मरना और फिर परमेश्वर के न्यायानुसार प्रतिफल पाना परमेश्वर की ओर से नियुक्त किया गया है। और बाइबल यह भी कहती है, कि सब ने पाप किया है। (रोमियों ३:२३)।

लेकिन परमेश्वर ने मनुष्य को नरक से बचने का एक मार्ग बताया है। और वह मार्ग है यीशु मसीह। बाइबल कहती है, कि जब मनुष्य के पास नरक के दण्ड से बचने की कोई आशा नहीं थी, तो परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपने प्रेम और अनुग्रह को इस प्रकार प्रदर्शित किया, कि जब हम सब पापी ही थे तो उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारे पापों का प्रायश्चित करने को भेज दिया। उसने ऐसा होने दिया, कि उसका पुत्र यीशु, जो उसी के समान पवित्र, धर्मी, और निष्पाप था, पापियों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा जाए। अर्थात उसने पापियों के दण्ड को अपने ऊपर उठा लिया। बाइबल में लिखा है, कि वह धनी होकर भी कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से हम उसमें होकर धनी हो जाएं। (२ कुरिन्थियों ८:९)। और वह निष्पाप होने पर भी पाप ठहराया गया, ताकि हम उस में होकर परमेश्वर के निकट निष्पाप बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१)। परंतु हम यीशु के भीतर किस प्रकार आते हैं? गलतियों ३:२६,२७ में, बाइबल कहती है कि, "तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहन लिया है ।" सो जब हम अपने मन में यह विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित

करने को और हमारे पापों का दण्ड उठाने को क्रूस के ऊपर मरा था। और जब हम अपने सब पापों से मन फिराकर मसीह को पहन लेने के लिये पानी में बपतिस्मा लेते हैं, तो इस प्रकार हम मसीह के भीतर हो जाते हैं। इसीलिये बाइबल में लिखा है कि जो लोग मसीह यीशु में है उन पर अब दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, क्योंकि उनके बदले में उनके दण्ड को यीशु ने खुद अपने ऊपर उठा लिया है। किन्तु क्या आप यीशु मसीह में हैं? क्या आपने उसकी आज्ञा को मानकर उसे पहन लिया है? अगर आप यीशु मसीह में हैं तो आपके लिये यह एक सुसमाचार है, कि आप पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, क्योंकि यीशु आपके दण्ड को स्वयं पहले ही उठा चुका है। लेकिन अगर आप यीशु मसीह में नहीं है, तो आप एक बड़ी ही भयानक परिस्थिति में हैं। क्योंकि जब आप इस जगत को छोड़कर हमेशा के अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे, तो आप किस आशा के साथ वहां जाएंगे? इसलिये सबसे बड़ी और खास और महत्वपूर्ण बात आप के लिये आज यह है, कि आप अपने इस जीवन में, इस पृथ्वी पर, इस बात को पूरी तरह से निश्चित कर लें, कि इस से पहले कि आप यहां से जाएं आप जान लें कि आप मसीह में हैं। क्योंकि जो मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी। क्योंकि जो मसीह में हैं, वे उस में सुरक्षित हैं।

एक और खास बात यहां से हम यह भी देखते है, कि जो लोग मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा इसलिए भी नहीं होगी क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं, वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। मसीह में आने के लिये हम उसमें विश्वास लाते हैं, और पाप से अपना मन फिराते हैं, और अपने सब पूर्व पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं। (प्रेरितों २:३८;८:३५-३८)। पर उसमें आ जाने के बाद हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम फिर से दोबारा उस जीवन में न जाएं जिससे हमारा छुटकारा कराके हमें नया जीवन देने के लिये मसीह ने इतना बड़ा बलिदान दिया था। मसीह में आने से पहले इंसान अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार चलता था, पर उसमें आ जाने के बाद वह अब आत्मा के अनुसार चलता है। यहां आत्मा का अभिप्राय मनुष्य की आत्मा से नहीं है, पर ईश्वर की आत्मा से है। इसका अर्थ यह है, कि मसीह में आ जाने के बाद मनुष्य बाइबल में लिखी उन बातों के अनुसार चलता है जिन्हें परमेश्वर के पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया था। अर्थात, उस मनुष्य के जीवन का

उद्देश्य, जिसने मसीह को पहन लिया है, परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलकर उसे प्रसन्न करना हो जाता है। वह अपने शरीर की इच्छाओं के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करता है, पर उन बातों के अनुसार चलता हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल में दिया है। बाइबल कहती है कि जो लोग अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार चलते हैं वे परमेश्वर के राज्य में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे। पर शरीर के काम क्या हैं? बाइबल कहती है कि शरीर के काम हैं, व्यभिचार, गन्दे, काम, लुचपन, मूर्तीपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, इत्यादि । पर जो लोग परमेश्वर के आत्मा के अनुसार चलते हैं, उनके जीवनों में आत्मिक फल दिखाई देते हैं, अर्थात् प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम इत्यादि। बाइबल में लिखा है कि जो लोग मसीह यीशु में हैं उन्होंने अपने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। (गलितयों ५:१६-२४)। अर्थात्, उन्होंने यह मान लिया है, कि जब यीशु उन के स्थान पर क्रूस पर चढ़ाया गया था, तो उनके पाप का शरीर क्रूस पर उसके साथ नाश हो गया था। इसलिये वे अपना जीवन फिर से बुरे कामों में व्यतीत करना हीं चाहते, क्योंकि वे अपने छुटकारे के मूल्य को जानते हैं। वे जानते हैं कि अब वे यीशु मसीह में है, और उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, क्योंकि वे मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं। (यूहन्ना ५:२४)।

कितनी महान आशा है यह। कैसी विशाल आशा है यह। और यह आशा आज आप की भी हो सकती है - अगर आप आज अपने आप को यीशु को दे देंगे। क्या आप ऐसा करना न चाहेंगें? सारी गंभीरता के साथ इस बात पर विचार करें। और इस संबंध में यदि कोई प्रश्न आप के मन में हैं और आप उसका उत्तर जानना चाहते हैं, तो मैं आपकी सहायता करने के लिये तैयार हूं।

न्याय और प्रेम

न जाने कितनी ही बार आपने यह बात सुनी होगी, कि परमेश्वर प्रेम है। और यह सच है। पवित्र बाइबल में लिखा है :"हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है : और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है ; और परमेश्वर को जानता है। पर जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है । जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ है, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया ; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया ; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४:७ - १०)।

परमेश्वर प्रेम है। वह मनुष्य से प्रेम करता है। और यह बात स्वाभाविक है, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन दिया है, उसने इंसान को बनाया है। और अपने प्रेम को परमेश्वर ने इंसानों पर एक बड़ी ही खास तरह से प्रदर्शित किया है। "प्रेम" शब्द को आज के ज़माने में कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है। मनुष्य केवल उसी से प्रेम करता है जो उस से प्रेम करता है। क्या हम अपने बैरियों से प्रेम करते हैं? क्या हम उन से प्रेम करते हैं जो हम से घृणा करते हैं? नहीं। हम केवल उन्ही लोगों से प्रेम करते हैं जो हम से प्रेम करते हैं। अर्थात् सांसारिक प्रेम में कोई न कोई स्वार्थ है। अगर हम किसी को कुछ देते हैं तो हम यह आशा भी करते हैं कि वह भी हमें कुछ दे। हम केवल उन्हीं को नमस्कार करना चाहते हैं जो हमें नमस्कार करते हैं। हम अपने घर में उन्हीं लोगों को बुलाते हैं जो हमें भी बुलाते हैं। यह है सांसारिक प्रेम का

प्रदर्शन। किन्तु परमेश्वर हमसे ऐसा प्रेम नहीं करता। उसके प्रेम में कोई भी स्वार्थ नहीं है। उसका प्रेम केवल हमारी भलाई चाहता है। वह हम से इसलिये प्रेम नहीं करता कि हमारें पास उसे कुछ देने के लिये है। वह हम से इसलिये भी प्रेम नहीं करता कि हम उससे प्रेम करते हैं। परंतु वह हम से इसलिये प्रेम करता है, क्योंकि वह जानता है कि हमारे पास उसे देने के लिये कुछ भी नहीं है। वह हमसे इस कारण प्रेम करता है क्योंकि वह जानता है कि हम अपने अधर्म के कामों के कारण उसके बैरी हैं, और अपने पापों के कारण उससे दिन-प्रति-दिन दूर होते चले जा रहे हैं। वह हमें पाप के दण्ड से बचाना चाहता है। वह हमें नरक के अंधेरे कुण्ड में जाने से बचाना चाहता है। सिर्फ इसलिये क्योंकि वह हम से प्रेम करता है।

सांसारिक प्रेम का कारण कोई न कोई आकर्षण होता है। इंसान किसी मनुष्य या वस्तु को देखता है ; वह उसकी सुंदरता या किसी विशेषता को देखकर उस से आकर्षित हो जाता है, और उस से प्रेम करने लगता है। लेकिन परमेश्वर का प्रेम ऐसा नहीं है। क्योंकि हमारे भीतर तो कोई भी ऐसी खूबी नहीं हैं जो परमेश्वर को आकर्षित कर सके। हमारे काम, हमारी बोल-चाल, हमारा व्यवहार, और हमारे जीवन परमेश्वर को आकर्षित नहीं करते। वास्तव में परमेश्वर के वचन की पुस्तक तो यह कहती है, कि पृथ्वी पर सब के सब मनुष्य पाप के वश में हैं, और सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:६,२३) । पर तौभी परमेश्वर हम से प्रेम करता है। और बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने जगत के सारे लोगों से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु हमेशा का जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:६-८)। यहां से हम देखते हैं, कि जब कि हम सब निर्बल, पापी और अधर्मी थे, उस समय परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम रखा, कि

हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये परमेश्वर ने स्वंय अपने ही पुत्र यीशु मसीह को हमारे स्थान पर हमारे पापों का दण्ड दिलवाया, ताकि हम उस के द्वारा दण्ड से बचकर स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाएं। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो पाप को जानता भी नहीं था, उसी को परमेश्वर ने हमारे स्थान पर पाप ठहराया और उसे हमारे पापों की सज़ा दिलवाई ताकि हम उसके द्वारा, और उसमें होकर, परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन जाएं।

यहां हम विशेष रुप से दो बातें देखते हैं। एक तो यह कि परमेश्वर प्रेम है, और दूसरी यह कि परमेश्वर धर्मी है। उसका प्रेम हम इस बात में देखते हैं कि उसने हमारे दण्ड को स्वयं अपने ऊपर ले लिया। और उसका धर्मी ठहरना इस बात से साबित होता है कि उसने पाप से समझौते नहीं किया, पर उसने मनुष्य से तो प्रेम किया पर उसे उस के पाप का दण्ड भी दिया, यद्यपि वह दण्ड उसने मनुष्य को न देकर उसे स्वंय अपने ही ऊपर उठा लिया। इस बात को हम उस जज की कहानी से अच्छी तरह समझ सकते हैं जिसका बेटा उसी की अदालत में एक दिन उसके सामने लाया गया था कि वह उसका न्याय करे। उसका बेटा इस बात के लिये दोषी पाया गया था कि वह शराब पीकर तेज़ रफतार से गाड़ी चला रहा था और चौक पर लाल बत्ती होने पर भी उसने अपनी गाड़ी नहीं रोकी थी। जब उस लड़के का जुर्म साबित हो गया तो जज ने उसे पांच सौ रुपए दण्ड भरने की सज़ा सुनाई और फिर यह जानते हुए कि उसके बेटे के पास दण्ड भरने को इतना रुपया नहीं है उस जज ने खुद ही अपनी जेब में से पांच सौ रुपए निकाल कर अपने बेटे का दण्ड भर दिया।

मित्रो, अगर परमेश्वर हमारे पापों का दण्ड स्वयं अपने आप न भरता, तो हम अपने अपराधों के दण्ड से किस तरह बच सकते थे? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उस ने हम सब से ऐसा प्रेम रखा कि उसने यीशु मसीह में होकर हमारे पापों के दण्ड को स्वयं अपने ही ऊपर ले लिया और जहां हमें मरना चाहिए था वहां वह हमारे लिये स्वयं मर गया । इसीलिये, बाइबल कहती है, कि आज हम यीशु मसीह में विश्वास लाकर उसके द्वारा अपने पापों के दण्ड से बच सकते हैं।

यही है परमेश्वर का सुसमाचार, जो जगत में सब लोगों के लिये है, कि यीशु मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित है। इससे भी पहले कि हम इस जगत में आकर पाप करते और पाप करके परमेश्वर से दूर हो जाते, हमारे पापों का प्रायश्चित किया जा चुका था। यीशु हमारे पापों का छुटकारा है, वह हमारे पापों का दाम है। उसमें हम परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाते हैं। सो अगर आप अपने पापों से मुक्ति पाना चाहते हैं, और इस जीवन के बाद परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं तो यीशु के पास आईए। उसके सिवाए और कोई उद्धारकर्त्ता नहीं है। केवल वही स्वर्ग का मार्ग, और परमेश्वर की सच्चाई, और जीवन का दाता है। उसमें विश्वास लाएं। उसकी आज्ञाओं का पालन करें और उसमें होकर अपने जीवन को व्यतीत करें।

सच्चा प्रेम

बाइबल में १ कुरिन्थियों के तेरहवें अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं :

"यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मै ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को दे दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नही मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनंदित होता है । वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, और सब बातों में धीरज धरता है।" (१ कुरिन्थियों १३:१-७)।

आज संसार में अगर किसी भी वस्तु की सबसे अधिक आवश्यकता है, तो वह चीज़ है, "प्रेम"। आज की दुनिया में सब कुछ है लेकिन प्रेम नहीं है। और इसी कारण, आज हम क्या देख रहे हैं? हमारे देश के सभी प्रान्तों में, और संपूर्ण देश में, और सारी दुनिया में, एक ही परमेश्वर के बनाए हुए लोग एक दूसरे को धोखा दे रहे हैं, एक दूसरे को लूट रहे हैं, और एक दूसरे का

खून कर रहे हैं। ऐसा लगता है, कि लोग यह भूल चुके हैं, कि एक दिन हम में से हर एक को अपने-अपने कामों का लेखा परमेश्वर को देना होगा।

परमेश्वर की बाइबल हमें यह सिखाती है कि "जो कोई अपने भाई से बैर रखता है वह हत्यारा है।" (१ यूहन्ना ३:१५)। बाइबल कहती है,परन्तु "हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है; और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है, और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता; क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है वह इस से प्रकट हुआ है, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उस के द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं है, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४:७-१०)।

आपस में प्रेम रखना बाइबल की एक प्रमुख शिक्षा है। बाइबल कहती है कि, "सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है।" (१ पतरस ४:८)। प्रेम, यानि जो सच्चा प्रेम है, वह कृपाल है, वह धीरजवन्त है, उसके भीतर क्षमा है, वह नुकसान उठा लेता है लेकिन नुकसान पहुंचाता नहीं, वह सब कुछ सह लेता है, वह डाह नहीं करता ; वह अपनी बड़ाई के लिये कुछ नहीं करता। और ऐसा ही प्रेम परमेश्वर हम सबसे करता है। जब हम पापी ही थे, बाइबल कहती है, तभी मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियों ५:८)। उसने परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा खाली कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रुप में प्रकट होकर उसने अपने आप को ऐसा दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। (फिलिप्पियों २:६-८)।

यहां इस बात पर ग़ौर करें, कि यह सब कुछ उस ने उस समय किया जबकि हम सब पापी थे। उसने हमारे कारण स्वर्ग को छोड़ा। वह एक इंसान

बना। उसने मनुष्यों की सेवा करके एक दास का सा जीवन व्यतीत किया। और फिर उसने सारे जगत के पापों के लिये अपने आप को दोषी मान लिया। और मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित करने के लिये उसने अपने आप को बलिदान कर दिया। बाइबल में लिखा है, कि प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा। (१ यूहन्ना ४:१०)।

और इसी बात को बाइबल में सुसमाचार यानि खुशी की खबर कहकर संबोधित किया गया है। प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था, कि तुम जाकर इस सुसमाचार को सब लोगों को सुनाओ और जो भी सुनकर विश्वास लाएगा और अपना मन फिराकर बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६:१५,१६; प्रेरितों २:३८)। परमेश्वर चाहता है, कि जगत में प्रत्येक मनुष्य उसके प्रेम के सुसमाचार से परिचित हो जाए। वह चाहता है, कि हर एक इंसान यह जान ले कि परमेश्वर उस से प्रेम करता है, और यीशु मसीह उसके पापों का प्रायश्चित है। इसीलिये उसने हम सबको अपनी बाइबल को दिया है। बहुतेरे लोग बाइबल को एक धर्म की किताब समझते हैं और इसीलिये वे बाइबल को नहीं पढ़ते हैं। परंतु उनका ऐसा सोचना गलत है। कभी-कभी बाइबल को छापनेवाले लोग उसके ऊपर धर्मशास्त्र या धर्म-पुस्तक लिख देते हैं। लेकिन यह भी गलत है। क्योंकि बाइबल किसी धर्म की किताब नहीं है, बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। "बाइबल" शब्द का अर्थ "धर्म-पुस्तक" नहीं है, किन्तु बाइबल का अर्थ है "एक किताब" सिर्फ एक किताब। और यह किताब परमेश्वर के वचन की किताब है। अर्थात् इस पुस्तक में हम उन बातों को पढ़ते हैं जिन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से मनुष्यों के लिये लिखा गया है। और परमेश्वर की पुस्तक हमें यह बताती है, कि वह हम सबसे सच्चा प्रेम करता है। और उसने अपने उस प्रेम को हम सबके ऊपर यीशु मसीह के द्वारा प्रदर्शित किया है, जिसे उस ने हमारे कारण पाप ठहराया था और हमारे पापों का प्रायश्चित भी ठहराया है।

क्या आप उस सच्चे परमेश्वर में विश्वास करते हैं जिसने मुझे और आप को जीवन दिया है? क्या आप उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर विश्वास करते हैं जिसके सामने हम सब को एक दिन अपने-अपने जीवनों का लेखा देना

पड़ेगा? आप का और मेरा परमेश्वर एक है। सारी दुनिया का परमेश्वर एक है। वह हम सबसे एक समान प्रेम करता है। उसने हम सबको पाप के दण्ड से बचकर उद्धार पाने का एक मार्ग दिया है - और वह मार्ग या उपाय है उसका पुत्र यीशु मसीह। इसी कारण प्रभु यीशु ने कहा था, कि मार्ग, और सच्चाई, और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना १४:६)। क्या आप उसमें विश्वास करते हैं? क्या आप उस से प्रेम करते हैं, जिसने हम सब से ऐसा प्रेम रखा कि पाप से हमारा उद्धार करने को उसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया? प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को भी मानोगे। (यूहन्ना १४:१५)।

आह, वह प्यारी सलीब !

जब हमारा ध्यान यीशु मसीह के ऊपर जाता है तो उसी समय हमारा ध्यान यीशु मसीह के क्रूस के ऊपर भी जाता है। यानि यीशु और उसका क्रूस दोनों ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम अलग नहीं कर सकते। जब हमारा ध्यान क्रूस पर जाता है तो उसी वक्त हमारा ध्यान मसीह पर जाता है। और जब हमारा ध्यान मसीह पर जाता है, तो उसी समय, हम क्रूस के बारे में भी सोचते हैं। यानि क्रूस और मसीह, और मसीह और क्रूस दोनों एक साथ हैं, हम उन्हें जुदा नहीं कर सकते। नीकुदेमुस से बोलते हुए यीशु ने उस से कहा था, कि जिस तरह से मूसा ने जंगल में सांप की प्रतिमा को ऊंचे पर चढ़ाया था उसी तरह से एक दिन वह भी ऊंचे पर चढ़ाया जाएगा। (यूहन्ना ३:१४)। यीशु जानता था कि वह क्रूस पर ऊंचे पर चढ़ाया जाएगा। वह इसी उद्देश्य से पृथ्वी पर आया था कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। क्रूस मसीह का उद्देश्य था। वह क्रूस पर मरने के लिये ही इस जमीन पर आया था। क्रूस मसीहीयत का आधार है। क्रूस दुख और बलिदान का निशान है। और क्रूस मसीह के एक अनुयायी का घमण्ड है। क्रूस को छोड़ जमीन पर कोई ऐसी चीज नहीं है जिस पर मसीह के अनुयायी को घमण्ड करना चाहिये क्योंकि यदि क्रूस न होता, तो उद्धार न होता। यदि क्रूस न होता, तो प्रायश्चित न होता। और यदि क्रूस न होता, तो पाप का दाम किस प्रकार चुकाया जाता? सो प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर कहता है, "पर ऐसा न हो कि मैं और किसी बात पर घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।" (गलतियों ६:१४)।

जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जब वे उस की आराधना करने के लिये इकट्ठे होते हैं, तो वे अकसर एक गीत गाते हैं, जो इस प्रकार हैः

"आह ! वह प्यारी सलीब, मुझ को दीख पड़ती है, एक पहाड़ी पर जो खड़ी थी, कि मसीह-ए-मसलूब ने मुसीबत उठा, गुनहगारों की खातिर जान दी।" जब हम उस सलीब के बारे में सोचते हैं जिस पर मसीह को लटकाया गया था, तो उसमें वास्तव में हमें कोई ऐसी चीज़ नज़र नहीं आती जिस से हम उसे एक प्यारी सलीब कह सकें। वो तो लकड़ी के दो खुरदरे लट्ठे थे, जिन्हें देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते थे ; क्योंकि क्रूस मौत का दूसरा नाम था। क्रूस या सलीब कोई सजाने की चीज़ नहीं थी। उसमें कोई ऐसा आकृष्ण नहीं था कि लोग उसे चाहते। पर मसीह ने उस सलीब के ऊपर चढ़कर उसे प्यारा बना दिया। वह सलीब इसलिये प्यारी नहीं थी कि उसमें खुद कोई खूबसूरती थी, पर मसीह ने उस सलीब पर चढ़कर और उसके ऊपर अपने आप को कुर्बान करके उसे प्यारा बना दिया था। आज मैं आप को यह सो बताना चाहता हूं कि मसीह की सलीब सचमुच में एक प्यारी सलीब थी।

वह एक प्यारी सलीब थी, क्योंकि उसके ऊपर परमेश्वर का एकलौता पुत्र बलिदान हुआ था। लोगों ने उसे पकड़ा था। लोगों ने उसे क्रूस पर लटकाया था। लोगों ने उसे मारा था। परंतु यदि यह अधिकार उन्हें परमेश्वर ने न दिया होता, तो वे ऐसा कदापि नहीं कर पाते। जब यीशु को पीलातुस के सामने लाया गया था, तो पीलातुस ने हैरान होकर यीशु से पूछा था कि तू अपने पक्ष में मुझ से कुछ क्यों नहीं कहता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का भी मुझे अधिकार है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी अधिकार मुझे है? उस समय यीशु ने पीलातुस से सिर्फ यह कहा था, कि यदि यह अधिकार तुझे परमेश्वर की ओर से न दिया गया होता तो तेरा मुझ पर कोई अधिकार नहीं होता। (यूहन्ना १८:१०,११)। यीशु क्रूस पर मनुष्यों के अधिकार से नहीं परंतु परमेश्वर के अधिकार से चढ़ाया गया था।

यीशु के बारे में बाइबल कहती है कि उस ने "परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रुप में प्रकट होकर अपने आप को ऐसा दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:६-८)। पर क्यों? ताकि आपके और मेरे पापों का प्रायश्चित हो जाए। ताकि जगत के सारे लोगों के पापों का

प्रायश्चित हो जाए। कितना बड़ा और अद्‌भुत और खुबसूरत सुसमाचार है आज यह हमारे लिये !

यदि कोई आप को जलते हुए घर में से बाहर निकालकर बचा ले, तो उस व्यक्ति के लिये आप के मन में कितना आदर होगा? अगर कोई आप को समुद्र में डूबने से बचा ले, तो उस इंसान के आप कितने अहसानमंद होंगे? और अगर कोई आप को मौत के मुंह में से बाहर निकाल ले तो उस मनुष्य के आप कितने आभारी होंगे? पर शायद आप को आग से बचाते हुए उस व्यक्ति के हाथ जल जाएं। शायद आपको समुद्र में डूबने से बचाने के लिये उस इंसान के कपड़े भीग जाएं। और शायद आप को उस दुर्घटना से बचाने के लिये उस मनुष्य को खुद चोट लग जाए। पर यीशु के बारे मे सोचें। उस ने क्रूस पर चढ़ने से पहले लोगों के घूंसे और थप्पड़ खाए थे ; उन्हों ने उसके मुंह पर थूका था, और उस से कहा था कि तू ने औरों को बचाया पर अब अपने आप को बचा। फिर उन्होंने उसे उस क्रूस पर कीलों से ठोककर उसे आसमान और जमीन के बीच लटका दिया था। और इस तरह से यीशु ने यह कहकर अपने आप को कुर्बान कर दिया था कि, हे परमेश्वर इन्हें तू क्षमा करना क्योंकि इन्हें तो मालूम ही नहीं है कि इन्हों ने यह क्या और क्यों किया है। बाइबल में लिखा है, कि, "जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा था। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों ५:६-८)।

जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिये मरा। मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मरा था। वह हमें एक ऐसी जिन्दगी देने के लिये क्रूस पर मरा जो हमेशा की जिंदगी है। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परंतु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)।

जब इंसान इस जमीन को छोड़कर इस जगत से चला जाता है तो वह उस अनन्तकाल में चला जाता है जहां धर्मी हमेशा परमेश्वर के साथ रहेंगे और

अधर्मी नरक में हमेशा का दण्ड भोगेंगे। (मत्ती २५:४६)। परंतु यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित है। उस ने हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया था; उसने हमारे पापों का दण्ड क्रूस के ऊपर उठाया था। इसलिये अगर आज हम उस मे हैं तो हम जानते हैं, कि जब हम इस जगत से जाएंगे वो हम अनन्तकाल में किस जगह जाएंगे। यीशु में होने के कारण हम जानते हैं कि हम अपने पापों के कारण नरक में हमेशा का दण्ड नहीं भोगेंगे, पर उसमें होने के कारण हम परमेश्वर के स्वर्ग में हमेशा की ज़िंदगी पाएंगे। क्योंकि यीशु ने उस प्यारी सलीब के ऊपर अपने आपको बलिदान करके हमारे पापों का प्रायश्चित किया था। आह ! वह प्यारी सलीब !

क्या आपके पास आज यह आश्वासन है? क्या आपके पास यह भरोसा है? क्या आप के पास यह आशा है? यदि आप यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाकर अपने सब पापों से मन फिराएंगे और उसकी आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये जल में बपतिस्मा ले लेंगे, तो वह आपके सब पापों को क्षमा करेगा, और आप उस में होकर एक नई सृष्टि बन जाएंगे। (प्रेरितों २:३८; २ कुरिन्थियों ५:१७)। आप को एक नई ज़िंदगी मिल जाएगी। एक नई आशा मिल जाएगी और कौन सी चीज आज आप को रोकती है, यीशु के पास आने को? याद रखें, आपके पास केवल यही एक जीवन है। और इस जीवन के बाद, हम सबके सामने परमेश्वर का न्याय है, और अनन्तकाल है। सो हम इस अवसर को हाथ से न जाने दें। आप स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन जाएंगे।

क्रूस की मौत

बाइबल का एक बड़ा ही प्रमुख विषय है क्रूस। क्रूस लकड़ी के दो हिस्सों से बना हुआ होता था। एक मज़बूत पेड़ के तने को दो भागों में काटा जाता था। उसका एक हिस्सा लम्बा रखा जाता था और दूसरा कुछ छोटा रखा जाता था। और फिर लकड़ी के उस छोटे भाग को बड़ी वाली लकड़ी के ऊपरी हिस्से के साथ बांधा या कीलों से ठोंक दिया जाता था। इस प्रकार क्रूस का आकार कुछ ऐसा बन जाता था, जैसे कि कोई मनुष्य हाथों को फैलाए खड़ा हो। ऊपर सिर, नीचे पैर और हाथ इधर-उधर दोनों तरफ। पहली शताब्दी में और उस से पूर्व रोमी साम्राजय में किसी भी अपराधी को मृत्यु दण्ड देने के लिये प्रायः क्रूस पर लटकाया जाता था । क्रूस की मृत्यु एक बड़ी ही दुखदायी मृत्यु होती थी। जिस इंसान को क्रूस पर चढ़ाया जाता था, उसे मजबूर किया जाता था कि वह खुद अपना क्रूस उठाकर उस जगह तक ले जाए जहां उसे क्रूस पर चढ़ाया जाता था। फिर उस मनुष्य को पकड़कर उसी क्रूस के ऊपर लिटा दिया जाता था, और उसके हाथों को क्रूस के ऊपर फैलाकर कीलों से ठोंक दिया जाता था। हाथों और पैरों को कीलों से क्रूस पर ठोंकने के बाद, कुछ आदमी उस क्रूस को खड़ा करके उसके निचले हिस्से को करीब चार फुट गहरे गड्ढ़े में दबा देते थे। और इस प्रकार वह इंसान जो क्रूस पर चढ़ा होता था मरने के लिये आकाश और पृथ्वी के बीच में छोड़ दिया जाता था। कुछ समय बाद जब वह मनुष्य क्रूस पर मर जाता था तो उसके मित्र या संबधी उस क्रूस पर से उसकी लाश को उतारकर उसे कब्र में दबा देते थे। पर जिसका कोई नहीं होता था, उसकी लाश क्रूस पर ऐसे ही लटकी रहती थी, और चील-कव्वे आकर

उसे खा लेते थे। सो क्रूस की मौत एक बड़ी ही भयानक मौत थी।

पर यदि यीशु क्रूस पर न मरता तो शायद बाइबल में क्रूस के बारे में कभी नहीं लिखा जाता। पर बाइबल कहती है, कि यीशु को क्रूस पर मृत्यु दण्ड दिया गया था। वास्तव में बाइबल हमें यह बताती है, कि यीशु पृथ्वी पर आया ही इसी उद्देश्य से था कि वह क्रूस पर मारा जाए । क्योंकि इस प्रकार परमेश्वर उसकी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था। और यीशु स्वंय भी इस बात को जानता था, कि वह क्रूस पर चढ़ाकर मारा जाएगा। इसीलिये उस ने एक जगह कहा था, कि जिस तरह मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया था, उसी तरह से वह भी एक दिन ऊंचे पर चढ़ाया जाएगा। (यूहन्ना ३:१४) । इसी प्रकार, यीशु यह भी जानता था कि क्रूस पर उसकी मृत्यु के बाद उसकी देह को एक कब्र के भीतर गाड़ा जाएगा और कुछ समय बाद वह फिर से जी उठेगा। इसीलिये उस ने कहा था, कि जब तक गेंहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, पर जब वह मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। (यूहन्ना १२:२४)। और एक बार जब कुछ यहूदी उस से मांग कर रहे थे कि वह उन्हें कोई चिन्ह दिखाए, तो यीशु ने उन से कहा था, कि इस मंदिर को ढ़ा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा। (यूहन्ना २:१६)।

पर यीशु को क्रूस पर क्यों चढ़ाया गया था? उसने क्या अपराध किया था? उसे क्रूस पर मृत्यु दण्ड क्यों दिया गया था? जब यीशु को पीलातुस हाकिम के सामने लाया गया था, तो पीलातुस ने यीशु की जांच करने के बाद लोगों से कहा था, कि मैं इस में कोई दोष नहीं पाता। और यह बात वास्तव में सच थी। क्योंकि यीशु ने कभी भी कोई ऐसा काम नहीं किया था जिसके लिये वह दोषी ठहराया जाता। और ऐसा दोषी कि उसे क्रूस पर मौत का दण्ड दिया जाता। उसने तो केवल अच्छाई और भलाई ही की थी। उसने भूखों को खाना खिलाया था, बीमारों को चंगा किया था, और लोगों को परमेश्वर की इच्छा पर चलने की शिक्षा दी थी । परंतु फिर भी कुछ लोग ऐसे थे जो उस से ईर्ष्या रखते थे और उसे मृत्यु दण्ड दिलवाना चाहते थे। क्योंकि वह उनके धार्मिक पाखण्ड और दिखावे का पर्दा-फाश कर रहा था। और बाइबल कहती है, कि यीशु को दोषी ठहराने के लिये न केवल उन्होंने लोगों को उसके विरुद्ध उभारा था पर

उन्होनें पीलातुस के सामने कुछ झूठे गवाहों को भी लाकर खड़ा किया था, जिन्होंने यीशु के विरुद्ध यह गवाही दी थी कि वह लोगों को कहता है, कि राजा को कर मत दो, और वह खुद अपने आप को राजा कहता है । पर इन सब बातों के बा-वजूद भी यीशु ने पीलातुस से कुछ नहीं कहा था। यहां तक कि पीलातुस को यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ था, और उसने यीशु से कहा था, कि तू कुछ बोलता क्यों नहीं? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझें है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी अधिकार मुझे है? इस पर यीशु ने पीलातुस से कहा था, "कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता,तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।" (यूहन्ना १९:११)।

पर यीशु को क्रूस पर क्यों चढ़ाया गया था? उसने क्या अपराध किया था? उसे क्रूस पर मृत्यु दण्ड क्यों दिया गया था? यह इसलिये हुआ था क्योंकि परमेश्वर ने यीशु के लिये ऐसा पहले से ठहराया था! यह परमेश्वर के अधिकार से और उसकी इच्छा से हुआ था। हम बाइबल में पढ़ते है, कि जिस समय महायाजक के आदमी यीशु को पकड़ने के लिये आए थे, तो यीशु के साथियों में से एक ने अपनी तलवार खींचकर उसे बचाना चाहा था। पर यीशु ने उस से कहा था, कि "अपनी तलवार म्यान में रख ले। क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? पर पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है क्योंकर पूरी होगी? (मत्ती २६:५२-५४)। यीशु अपनी मर्जी से क्रूस पर चढ़ा था । क्योंकि वह जानता था कि उसके बारे में यही परमेश्वर की इच्छा है।

इस से भी पहले कि यीशु इस पृथ्वी पर जन्म लेकर क्रूस के ऊपर मरता, उसके बारे में बाइबल में यह लिखा जा चुका था, कि उस ने हमारे दुखों को उठा लिया और वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे ही अधर्म के कामों के कारण वह कुचला गया। (यशायाह ५३:४,५)। यीशु क्रूस पर एक अपराधी की तरह मारा गया था, जबकि उसने स्वयं कोई अपराध नहीं किया था। लेकिन तौभी परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि वह एक अपराधी की सी सजा पाए। क्योंकि उसकी मौत के द्वारा परमेश्वर सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था।

इसीलिये आज, बाइबल कहती है, कि कोई भी मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास करके परमेश्वर के नज़दीक धर्मी ठहर सकता है। आज अगर आप यीशु मसीह में यह विश्वास लाएंगे कि वह आपके पापों का प्रायश्चित है, और अपने सब पापों से मन फिराकर, उसकी आज्ञा को मानकर, अपने सब पापों की क्षमा के लिये जल में बपतिस्मा लेंगे, तो परमेश्वर अपने पुत्र यीशु की उस मौत के कारण जिसके द्वारा उसने जगत के पापों का प्रायश्चित किया था आप के सब अपराधों और पापों को क्षमा कर देगा। इसलिये क्रूस पर यीशु की मौत हम सब के लिये एक सुसमाचार है। परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने हम सबके पापों के लिये अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि उसमें विश्वास लाकर, हम अपने पापों से मुक्ति पा लें और उसके स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के योग्य बन जाएं। आज जबकि लोग मुक्ति और उद्धार पाने के लिये लम्बी-लम्बी यात्राएं कर रहे हैं ; अपने शरीरों को दुखों से छलनी कर रहे हैं, हमारा परमेश्वर अपनी बाइबल में हमें यह बता रहा है कि उसने हम सब के पापों का प्रायश्चित कर दिया है ; वह हम से कह रहा है, कि उसने हमारे दण्ड को स्वंय अपने ऊपर सह लिया है । और अब वह हमें मुक्ति देना चाहता है ; वह हमारा उद्धार करना चाहता है। वह चाहता है, कि हम सब उसके पुत्र यीशु में विश्वास लाएं और अपने जीवनों को उसे सौंप दें। क्या आप आज ऐसा करना न चाहेंगे ?

क्रूस का संदेश

यह सचमुच में बड़ी ही खुशी की बात है, कि एक बार फिर से इस समय मैं आप को उस यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने जा रहा हूं जो पापियों को बचाने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। यीशु के बारे में बाइबल में लिखा है, कि उसने "परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रुप में प्रकट होकर, अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि उसने मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:६-८)।

यीशु पृथ्वी पर एक इंसान बनकर आया था। वह इंसान नहीं था, वह वास्तव में परमेश्वर था। लेकिन फिर भी, वह एक इंसान बनकर ज़मीन पर आया था, क्योंकि परमेश्वर होने के कारण वह यह जानता कि मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित केवल वही कर सकता है। क्योंकि ज़मीन पर मनुष्यों में कोई भी ऐसा नहीं है जिसमें कोई पाप न हो। पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य पापी है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर पृथ्वी पर जितने भी लोग हुए हैं उन सब ने पाप किया है। बाइबल में हम आदम के बारें में पढ़ते हैं, जिसे परमेश्वर ने सबसे पहले बनाया था। फिर हम बाइबल में नूह के बारे में पढ़ते हैं, जिसे परमेश्वर ने जल-प्रल से बचाया था। ऐसे ही हम विश्वासियों के पिता इब्राहीम और धर्मी लूत के बारे में भी पढ़ते हैं । फिर हम परमेश्वर की ओर से बोलनेवाले मूसा के बारे में भी पढ़ते हैं, जिसके हाथों से परमेश्वर ने बड़े-बड़ें काम करवाए थे। और ऐसे ही बाइबल में हम अनेकों भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरित पौलुस जैसे लोगों के बारें में

भी पढ़ते हैं। पर उन सब ने पाप किया था। यानि मेरे कहने का अर्थ यह है, कि आदि से अन्त तक हम किसी भी ऐसे इंसान के बारे में कहीं नहीं देखते जिसने पृथ्वी पर आकर ऐसा जीवन व्यतीत किया हो जो पापरहित और निष्कलंक रहा हो। और इसी कारण से परमेश्वर को स्वयं एक मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आना पड़ा। उसने न केवल अपनी मृत्यु के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित ही किया। परंतु उसने पृथ्वी पर रहकर एक ऐसा जीवन भी व्यतीत किया जो हर एक इंसान के लिये एक आदर्श है । जब हम उसकी शिक्षाओं को मानते हैं, जब हम उसकी शिक्षाओं पर चलते हैं, और जब हम उसकी शिक्षाओं पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, तो हम जानते हैं कि हम अंत में उसी के समान परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में भी प्रवेश करेंगे।

सो हम देखते हैं, कि यीशु के द्वारा हमें एक नया जीवन मिलता है - एक ऐसा नया जीवन, जिसका महत्व न केवल इसी जगत तक सीमित है परंतु आने वाले जगत में भी वह जीवन बड़ा ही महत्वपूर्ण जीवन होगा। परंतु यहां आप शायद सोचें कि आनेवाले जगत से मेरा क्या अभिप्राय है? आनेवाले जगत से मेरा अभिप्राय उस जगत से है, जिसमें अनन्तकाल होगा - जो कभी समाप्त नहीं होगा। हमारा यह वर्तमान जगत एक दिन अवश्य ही समाप्त हो जाएगा - इस में पाई जाने वाली हर एक वस्तु का अस्तित्व एक दिन समाप्त हो जाएगा। पर एक चीज़ परमेश्वर ने ऐसी बनाई है जिसका अस्तित्व कभी भी खत्म नहीं होगा, और वह चीज़ हैं इंसान की आत्मा अर्थात् इंसान का भीतरी मनुष्यत्व, यानि मनुष्य का प्राण जो कि परमेश्वर का स्वरुप और उसकी समानता है। जबकि एक दिन हर एक वस्तु का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, मनुष्य की आत्मा के अस्तित्व को कोई नहीं मिटा सकता, क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर का स्वरुप है। बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते है:

"तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और

जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परंतु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा।" (१ यूहन्ना २:१५-१७)।

यहां इस बात पर ग़ौर करें, कि परमेश्वर की बाइबल कहती है कि जो इंसान परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा यानि हमेशा बना रहेगा। अब इसका मतलब यह नहीं है कि जो लोग परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चलते उनका अस्तित्व खत्म हो जाएगा या वे सर्वदा नहीं बनें रहेंगे। परंतु सच्चाई यह है कि आत्मिक भाव से हर एक मनुष्य, चाहे वह परमेश्वर की इच्छा पर चलता है या नहीं चलता है, हमेशा बना रहेगा। क्योंकि मनुष्य उस परमेश्वर का स्वरुप है जो आत्मा है। लेकिन जो इंसान परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह इस तरह से हमेशा बना रहेगा कि वह परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करके वहां हमेशा की ज़िंदगी पाएगा। जबकि वे लोग जो परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चलते हैं हमेशा के लिये परमेश्वर से दूर रहकर अपने पापों का दण्ड भोगेंगे। प्रभु यीशु ने उनका वर्णन करके एक जगह कहा था, कि "ये अनन्त दण्ड भोगेंगे, परंतु धर्मी अनंत जीवन में प्रवेश करेंगे" (मत्ती २५:४६)। प्रभु यीशु ने यह भी कहा था कि,"सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है ; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े है जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७:१३,१४)।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के ऊपर विचार करते हैं तो हमारा ध्यान इस बात पर जाता है, कि हम सब को स्वर्ग में अनन्त जीवन देने के लिये उसने कितना बडा बलिदान किया था। उसने हमें बचाने के लिये स्वर्ग को छोड़ा था। वह हमारा उद्धार करने के लिये एक इंसान बना था। उसमें स्वंय कोई पाप नहीं था, परंतु फिर भी जगत के सब पापों को उसने अपने ऊपर ले लिया था। और परमेश्वर ने यह होने दिया था, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए और मारा जाए ताकि उसकी मौत से सारे जगत के पापों का प्रायश्चित हो जाए। इसीलिये, बाइबल में लिखा है कि यीशु मसीह सारे जगत के पापों का

प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना ४:१०)। उसने क्रूस पर अपने आप को बलिदान करके दुनिया के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित किया था ।

आज जब हम प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर विचार करते हैं तो हमारा ध्यान इस बात पर जाता है, कि परमेश्वर हम सबसे कितना प्रेम करता है, कि हमें स्वर्ग में अनन्त जीवन देने के लिये उसने हम सबके पापों को यीशु मसीह में होकर स्वयं अपने ऊपर उठा लिया, और हमारा उद्धार करने के लिये उस ने मनुष्य के स्वरुप में होकर अपने आप को बलिदान कर दिया !

बाइबल में लिखा है, कि क्रूस का यह संदेश दुनिया में सब लोगों को सुनाया जाए, और जो लोग इस संदेश को सुनकर अपने सारे मन से यीशु मसीह में विश्वास लाएंगे और पाप से अपना मन फेरकर यीशु के नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, तो परमेश्वर, यीशु के बलिदान के फलस्वरुप, उन सब लोगों के पापों को क्षमा करेगा और उन्हें स्वर्ग में अनंत जीवन पाने की आशा देगा। मैं आज एक बार फिर से आपको यह बताना चाहता हूं कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है, वह आप को स्वर्ग में हमेशा की ज़िंदगी देने के लिये बचाना चाहता है, और उसके प्रेम का सबूत उसका क्रूस है। क्या आप विश्वास के साथ आज उसके पास आएंगे? इससे बड़ा और कोई भी दूसरा काम आज आप नहीं कर सकते। क्योंकि यीशु के पास आने का अर्थ है परमेश्वर के पास आना। यीशु के पास आने का मतलब है अपने पापों से उद्धार पाना और स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाने के योग्य बन जाना। क्या कोई ऐसी चीज़ है जो आप को उसके पास आने से रोक रही है?

यीशु स्वर्ग का मार्ग है

मनुष्य होने के कारण हम परमेश्वर को पूरी तरह से ठीक से नहीं समझ सकते। क्योंकि हमारा ज्ञान और हमारी समझ सीमित है। बाइबल में इसीलिये कई जगह परमेश्वर को पिता, और प्रेम और सर्वशक्तिमान कहकर संबोधित किया गया है। बाइबल में लिखा है कि, परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, पर उसके पुत्र यीशु ने उसे मनुष्यों पर प्रकट किया है। (यूहन्ना १:१८)। अपने स्वभाव और जीवन और कामों के द्वारा यीशु ने परमेश्वर को मनुष्यों पर प्रकट किया था। क्योंकि जैसा उसका स्वभाव था, और जैसा उसका जीवन था और जैसे उसके काम थे उनकी तुलना केवल परमेश्वर के साथ ही की जा सकती है। यीशु मनुष्य के रुप में स्वंय परमेश्वर था, इसीलिये लोग उसे ठीक से नहीं समझ पाते थे। और स्वयं उसके चेले भी उसे ठीक से नहीं समझ पाते थे। सो उन्हें अपने बारे में समझाने के लिये यीशु अकसर कुछ ऐसी वस्तुओं के उदाहरण उन्हें देता था जिनके महत्व को वे ठीक से समझ सकते थे। एक जगह यीशु ने उनसे कहा था कि "द्वार" मैं हूं, एक अन्य जगह उसने उन से कहा था, कि मैं एक "वैद्य" हूं, और फिर एक और जगह यीशु ने उन्हें अपने बारे में बताकर कहा था, कि मैं "जीवन की रोटी" हूं। किन्तु आज अपने पाठ में हम इस बात को देखेंगे कि यीशु ने एक जगह अपने आप को मार्ग कहकर क्यों संबोधित किया था?

बाइबल कहती है कि, उसके चेले उस से जानना चाहते थे कि परमेश्वर के पास पहुंचने का मार्ग क्या है? इस पर यीशु ने उन से कहा था कि, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। यहां इस बात पर ध्यान दें कि यीशु ने उन्हें किसी मार्ग के बारे में नही बताया था। उस ने उन से यह नहीं कहा था कि तुम

इधर से जाओ या उधर से जाओ। उसने उनका ध्यान किसी मार्ग की ओर नहीं दिलाया था। पर उसने उन से कहा था कि, "मार्ग मैं हूं।" यीशु स्वयं ही परमेश्वर का मार्ग है। अकसर कुछ लोग कहते हैं, कि मार्ग तो अनेक हैं, पर परमेश्वर एक है। किन्तु यह बात सही नहीं है। यदि एक परमेश्वर है तो उसका मार्ग भी एक ही है। क्योंकि परमेश्वर शांति का परमेश्वर है, वह गड़बड़ी और फूट का परमेश्वर नहीं है। यह सही है, कि शताब्दियों से लोगों ने अपने लिये अनेकों मार्गों को बना लिया है -परन्तु परमेश्वर ने मनुष्यों को अनेक मार्ग नहीं दिए हैं। परमेश्वर का मार्ग केवल एक है, और परमेश्वर का मार्ग यीशु मसीह है।

जब हम मार्ग के बारें में सोचते हैं तो हम देखते हैं कि मार्ग एक बड़ी ही महत्वपूर्ण चीज़ है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हम कहीं पहुंचना चाहते हैं, पर मार्ग न होने के कारण हम वहां नहीं पहुंच सकते। फिर कभी ऐसा भी होता है कि सही रास्ता न मालूम होने के कारण हम किसी गलत रास्ते पर चलने लगते हैं। लेकिन गलत रास्ते पर चलकर हम सही ठिकाने पर नहीं पहुंच सकते। यह बात न केवल सांसारिक दृष्टिकोण से ही सही है पर आत्मिक दृष्टिकोण से भी सही है। इसलिये हम में से हर एक के लिये यह बड़ा ही ज़रुरी है, कि इस से पहले कि हम एक गलत जगह पहुंच जाएं हम अपने लिये इस बात की पुष्टी कर लें कि जिस मार्ग पर हम चल रहे हैं, क्या वह सही है या नहीं? शायद आपको पिछले एशियाई खेलों की वह दौड़ याद होगी जिसमें शाईनी एब्राहम दौड़ रही थी । उसके दौड़ने में कोई कमी नहीं थी, और वह ऐसा सोचती थी की ईनाम उसी को मिलेगा। लेकिन इतनी मेहनत करने के बाद भी शाईनी को कुछ नहीं मिला। जानते हैं क्यों? इसलिये, क्योंकि वह एक गलत लाईन पर दौड़ रही थी। वह दौड़ रही थी, यह ठीक है, पर वह एक गलत मार्ग पर दौड़ रही थी। और इसलिये दौड़ के अंत में उसे एक भारी निराशा का सामना करना पड़ा का। पर यहां हम एक बात ज़रुर देखते हैं, कि शाईनी एब्राहम को शायद फिर अवसर मिले किसी और दौड़ में भाग लेने का और उसमें शायद वह जीत भी जाए। पर जिस दौड़ की बात हम यहां कर रहे हैं, वह एक ऐसी दौड़ है जिसमें हम सिर्फ एक ही बार दौड़ सकते हैं, और अगर

उस एक ही बार में हम गलत मार्ग पर दौड़ेंगे तो हमें हमेशा की निराशा का सामना करना पड़ेगा। क्योंकि इस आत्मिक दौड़ को दौड़ने का फिर हमें कभी मौका नहीं मिलेगा।

यहां जिस बात के ऊपर आपका ध्यान दिलाने की मैं कोशिश कर रहा हूं वह यह है कि आप इस बात को निश्चित कर लें कि आज जिस मार्ग के द्वारा आप परमेश्वर के पास पहुंचने का यत्न कर रहे हैं, क्या वह वास्तव में सही मार्ग है? क्या वह परमेश्वर का ठहराया हुआ मार्ग है? क्या वह मार्ग सचमुच में आप को परमेश्वर के स्वर्ग में पहुंचाएगा?

यीशु ने कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। सबसे पहले हम यह देखते हैं, कि यीशु अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर का मार्ग है। अर्थात उसके जीवन का अनुसरण करके हम परमेश्वर के पास पहुंच सकते हैं। बाइबल कहती है, कि वह हमारी ही तरह सब बातों में परखा तो गया था लेकिन फिर भी उस ने कभी कोई पाप नहीं किया था। (इब्रानियों ४:१५)। क्या आप मुझे यीशु के अलावा किसी और ऐसे इंसान के बारे में बता सकते हैं जिसने कभी कोई पाप नहीं किया था? दुनिया के इतिहास में ऐसा कोई इंसान कभी नहीं हुआ है। और शायद यीशु के बारे में भी यह बात कभी नहीं कही जाती कि उसने कभी कोई पाप नहीं किया था, अगर वह इंसान के रुप में परमेश्वर न होता। यीशु ने कभी कोई पाप नहीं किया था, क्योंकि वह सिर्फ एक इंसान ही नहीं था, पर वह मनुष्य के रुप में परमेश्वर था।

दूसरी बात हम यह देखते हैं, कि यीशु न केवल अपने जीवन के द्वारा ही परमेश्वर का मार्ग है, पर वह अपनी मृत्यु के द्वारा भी मनुष्य के लिये परमेश्वर का मार्ग है। मैंने अकसर इस बात को बार-बार कहा है, कि इस पृथ्वी पर आने का यीशु का उद्देश्य ही मृत्यु था। उसका जमीन पर आकर मरना परमेश्वर की योजना के अनुसार था। क्योंकि अगर वह पृथ्वी पर आकर जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर न मरता, तो इंसानों के पास आज भी परमेश्वर तक पहुंचने की कोई आशा नहीं होती। पाप मनुष्य और परमेश्वर

के बीच में एक दीवार के समान था। पाप इंसान और ईश्वर के बीच में एक खाई के समान था। और इसलिये उस दीवार का ढहना जरुरी था और उस खाई का भरना जरुरी था। और यह काम किया था यीशु की मौत ने। उसकी मृत्यु ने परमेश्वर और मनुष्यों के बीच खड़े बैर को मिटा डाला। क्योंकि वह निष्पाप था, उसमें कोई बुराई नहीं थी, तौभी वह सारे अधर्मियों के अधर्म का प्रायश्चित करने को मर गया था। उस ने जगत के सारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया था और हर एक पापी के लिये उसके स्थान पर उसने पाप का दण्ड पाया था। उसकी मौत ने पाप के गहरे समुद्र को भर दिया है और उस गहराई के ऊपर वह हमारे लिये एक रास्ता बन गया है। ताकि उस रास्ते पर चलकर हम अपने परमेश्वर के पास पहुंच जाएं। और एक बड़ी ही सुंदर बात यह है, कि आज हम सब यीशु को अपना मार्ग बना सकते हैं, और ऐसा करके हम अपने जीवनों में इस बात को निश्चित कर सकते हैं, कि हम सचमुच में आज उस मार्ग पर चल रहे हैं जिसे परमेश्वर ने ठहराया है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो ; और मुझ से सीखो ; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।" (मत्ती ११:२८-३०)।

क्या आप के जीवन में पाप को बोझ है? क्या आप अंधकार में चल रहे हैं? क्या आप एक अनिश्चित मार्ग पर चल रहे हैं? या क्या आप संसार के उस चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं, जो अनंत विनाश को पहुंचाता है ? इन सबसे छुटकारा पाने के लिये यीशु के पास आईए, क्योंकि वही परमेश्वर का मार्ग है ; केवल वही आपको उसके पास पहुंचा सकता है।

यीशु सच्चाई है

जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले पीलातुस के सामने लाया गया था तो पीलातुस ने यीशु से पूछा था, कि "सच्चाई क्या है?" पीलातुस सच्चाई जानना चाहता था। वह जानना चाहता था कि निर्दोष होते हुए भी वे लोग यीशु को क्रूस पर क्यों चढ़ाना चाहते थे? पर पीलातुस को यह सच्चाई यीशु के सिवाए और कोई दूसरा नहीं बता सकता था। और अगर यीशु पीलातुस को यह सच्चाई बता भी देता, तो क्या पीलातुस उसकी बात पर विश्वास करता? कदापि नहीं। क्योंकि सच्चाई यह थी कि वे लोग यीशु को इसलिये क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे क्योंकि वह परमेश्वर की मर्जी थी। यही कारण है कि यीशु ने पीलातुस को कोई जवाब नहीं दिया था। और पीलातुस हैरान था, वह सच्चाई जानना चाहता था !

और हम सब भी सच्चाई जानना चाहते हैं। सच्चाई को जानने के लिये हमने दुनिया भर में अदालतें बना रखी हैं। सच्चाई का पता लगाने के लिये हमारी सरकारें सीमितियां और आयोग नियुक्त करती हैं। हम सच्चाई सुनना पसन्द करते हैं ; हम सच्चाई जानना पसन्द करते हैं। हम कई बार पूछते हैं, कि सच्चाई क्या है? सच क्या है? सच्चाई का हम आदर करते हैं, और जो सच बोलता है उसकी हम प्रशंसा करते है। किन्तु सच्चाई क्या है?

प्रभु यीशु ने अपने चेलों से एक बार कहा था, कि "मार्ग, और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता"।(यूहन्ना १४:६)। सो आज मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहूंगा, कि सच्चाई स्वयं यीशु मसीह है। आज लोग परमेश्वर के पास पहुंचने के लिये अनेक प्रकार के साधनों के पास जा रहे हैं। अज्ञानता में आकर लोग पृथ्वी पर की प्रत्येक वस्तु के द्वारा परमेश्वर के पास पहुंचने का प्रयत्न कर रहे

हैं। और कुछ लोग मनुष्यों की अज्ञानता का लाभ उठाकर स्वयं अपने आपको मनुष्यों और परमेश्वर के बीच में एक बिचवई के रुप में प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसे लोगों का वास्तविक उद्देश्य केवल यश और धन कमाने तक ही सीमित रहता है। लेकिन भोले-भाले लोग अकसर ऐसे लोगों की चालाक हरकतों के शिकार बन ही जाते हैं। और एक बार जब उन्हें उनमें विश्वास हो आता है, तो वे धीरे-धीरे उन्हें भगवान के रुप में पूजने लगते हैं। लाखों और करोड़ों लोग दुनिया भर में आज एक अंध-विश्वास से चल रहे हैं। वे ऐसा सोचते तो ज़रुर हैं, कि वे सच्चाई पर चल रहे हैं, लेकिन हकीकत में वे सच्चाई को जानते तक नहीं। और दुख की बात तो यह है कि न जाने कितने लोग सच्चाई को जाने बिना ही इस दुनिया से प्रति दिन चले जाते हैं। परंतु, प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब तुम सच्चाई को जानोगे, तब सच्चाई तुम्हें आजाद करेगी। (यूहन्ना ८:३२)। और क्योंकि सच्चाई वह स्वंय ही है, इसलिये यदि हम उसे जानते हैं, तो हम सच्चाई को भी जानते हैं।

लेकिन यीशु ने अपने आपको सच्चाई कहकर संबोधित क्यों किया था ? इसलिये, क्योंकि उसके द्वारा सच्चाई जगत में आई थी। (यूहन्ना १:१७)। अगर यीशु इस जगत में नहीं आता तो लोग कैसे जानते कि परमेश्वर कौन है? यीशु ने ही पृथ्वी पर आकर लोगों पर सच्चे परमेश्वर को प्रकट किया था। बाइबल कहती है, कि यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है। (इब्रानियों १:३)। यीशु ने परमेश्वर को पिता कहा था। और जब उसके चेलों ने उस से कहा था, कि हे प्रभु तू हमें पिता को दिखा दे, तो यीशु ने उन से कहा था, कि जिसने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है। (यूहन्ना १४:९)। जिस प्रकार का जीवन यीशु ने इस पृथ्वी पर व्यतीत किया था, और जिस प्रकार के काम उसने लोगों के बीच में किए थे, और जिस तरह वह लोगों को अधिकार के साथ सिखाता था, ये सब बातें इस बात का प्रमाण थीं कि वह मनुष्य के रुप में वास्तव में परमेश्वर था।

हम बाइबल में उसके बारें में यूं पढ़ते हैं कि, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ

है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई - और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १:१-३,१४)।

न केवल यीशु ने ज़मीन पर सामर्थपूर्ण कामों को करके लोगों के बीच में परमेश्वर की सामर्थ को ही प्रकट किया था, पर अपने व्यवहार से उसने परमेश्वर की दया और उसके प्रेम को भी उन पर दर्शाया था। उसने लोगों के पाप क्षमा किए थे, और जो लोग उसे क्रूस पर चढ़ाकर यातनाएं दे रहे थे उस ने उन्हें भी क्षमा किया था। ये काम सिर्फ परमेश्वर ही कर सकता है। उसके पास शक्ति थी, उसके पास सामर्थ थी। वह चाहता तो अपने शत्रुओं को नाश कर सकता था, पर इसके विपरीत उसने उन्हें क्षमा किया। केवल परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है। सो हम देखते हैं, कि यीशु ने अपने जीवन और अपने कामों के द्वारा सच्चे परमेश्वर को जगत पर प्रकट किया था।

बाइबल में यीशु के बारे में लिखा है, कि वह सब बातों में हमारी ही तरह परखा तो गया था, लेकिन तौभी उसने कभी कोई पाप नहीं किया था। (इब्रानियों ४:१५)। यीशु ने जगत में आकर इस सच्चाई को साबित किया था, कि यदि मनुष्य चाहे तो वह पाप करने से बच सकता है। उसके जीवन का उद्देश्य था प्रत्येक बात में परमेश्वर को प्रसन्न करना, चाहे उसके लिये कितना भी बड़ा बलिदान क्यों न देना पड़े। और ऐसा ही उसने लोगों को सिखाया भी था। उसने कहा था, कि सबसे पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो, तो अन्य आवश्यक वस्तुएं परमेश्वर तुम्हें स्वयं ही दे देगा। (मत्ती ६:३३)।

फिर, यीशु ने पृथ्वी पर आकर इस महान सच्चाई को भी इंसानों पर प्रकट किया था, कि मनुष्य अपने पापों से छुटकारा पाकर धर्मी बनने के लिये खुद अपने आप कुछ नहीं कर सकता, अर्थात् मनुष्य अपने पापों का प्रायश्चित स्वयं कुछ करके नहीं कर सकता। सदियों से मनुष्य ने ऐसा सोचा है, कि वह कुछ भलाई के काम करके या अपनी ओर से कुछ देके अपने पापों का स्वयं

प्रायश्चित कर सकता है। शताब्दियों से मनुष्य ने ऐसा विश्वास किया है, कि अगर वह दान पुन के काम करेगा और धार्मिक स्थानों पर जाकर चढ़ावे चढ़ाएगा, और अपने आप को कष्ट देगा तो इस तरह से उसके पापों का प्रायश्चित हो जाएगा। पर यीशु ने क्रूस पर चढ़कर मनुष्य के इस विश्वास को गलत ठहरा दिया था। उसने कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परंतु अनन्त जीवन पाएं। (यूहन्ना ३:१६) यानि यीशु ने संसार पर इस सच्चाई को प्रकट किया था कि मनुष्य का उद्धार परमेश्वर अपने अनुग्रह से करता है। कोई भी इंसान इसलिये अपने पापों से उद्धार नहीं पाएगा कि उस ने खुद कुछ किया है - क्योंकि मनुष्य के पास है ही क्या कि वह अपने पापों के बदले में परमेश्वर को प्रसन्न करने को दे सके? बाइबल कहती है, कि जब हम निर्बल, असाहय और बिना किसी आशा के थे, तभी परमेश्वर ने हम अधर्मियों के लिये अपने पवित्र और निष्कलंक पुत्र यीशु को हमारे पापों की छुड़ौती के लिये दे दिया। और अगर यीशु पृथ्वी पर आकर जगत के पापों के लिये क्रूस पर न मरता तो फिर यह सच्चाई किस प्रकार साबित होती, कि परमेश्वर प्रेम है? लेकिन क्रूस पर चढ़कर यीशु ने सारे जगत में यह प्रमाणित कर दिया है कि परमेश्वर हकीकत में प्रेम है।

और ऐसे ही अगर यीशु पृथ्वी पर न आता तो मनुष्य अपनी आत्मा के विशाल महत्व को कैसे जानता? केवल उसी ने यह सिखाया था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले और अंत में अपनी आत्मा को नरक में खोए तो उसे क्या लाभ होगा? (मत्ती १६:२६)।

जब हम यीशु में विश्वास करके उसके पास आते हैं, और उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर उसे पहन लेते हैं तो उस में होकर हम संसार के झूठे संस्कारों और मन-गढ़ंत विचारों से और सब अंधकारपूर्ण बातों से स्वतंत्र हो जाते हैं। यीशु की शिक्षाओं को जानकर और उन पर चलकर हम परमेश्वर की इच्छा पर चलने लगते हैं। और तब सचमुच में हमें यह निश्चय हो जाता है कि जब हम इस पृथ्वी पर से उठाए जाएंगे तो हम अपने परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। यह एक महान सच्चाई है जिसे प्रकट करने के लिये परमेश्वर का

पुत्र यीशु इस पृथ्वी पर आया था। "तुम सच्चाई को जानोगे" यीशु ने कहा था, "और सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी।" क्या आप आज़ाद हैं? जगत की अंधकार पूर्ण बातों से? क्या आप आज़ाद है? मनुष्यों के बनाए धर्म-उपदेशों से, रीति-रिवाजों से और मनगढ़ंत बातों से? यदि आप सारे मन से विश्वास करके यीशु के पास आएंगे तो वह आप को सचमुच में आज़ाद कर देगा। क्या इस से बड़ा और कोई दूसरा काम आप इस धरती पर कर सकते हैं?

यीशु जीवन है

अगर मैं आपसे यह सवाल पूंछू कि इंसान को सबसे ज़्यादा प्यारी कौन सी चीज़ है? तो आप शायद जवाब देकर कहेंगे कि इंसान को सबसे ज़्यादा प्यार अपनी ज़िदगी से होता है। और आप का यह जवाब बिल्कुल सही है। मनुष्य को अपना जीवन सबसे अधिक प्यारा होता है। अगर किसी दुर्घटना में उसका सब कुछ खो जाए पर उसकी जान बच जाए, तो वह कहता है, चलो अच्छा हुआ, कम से कम मेरी जान तो बच गई। अपने जीवन को बचाने के लिये इंसान सब कुछ करने को और सब कुछ देने को तैयार हो जाता है। मनुष्य का सारा परिश्रम केवल अपने जीवन को सुखी करने के लिये ही होता है। जो इंसान दिन-रात मेहनत-मजदूरी करता है, वह सिर्फ इसलिये करता है कि उसका जीवन और उसके परिवार का जीवन सुखी बन सके। पेट भरना, तन ढकना, और एक छत के नीचे रहना, ये सब मनुष्य की आवश्यकताएँ हैं, और इन्हीं आवश्यकताओं को पूरा करते-करते,एक दिन इंसान इस जगत को छोड़कर हमेशा के लिये अपने सदा के घर को चला जाता है? अमीर हो या गरीब, राजा हो या फ़कीर, इंसान अपनी सारी उम्र अपने जीवन के सुख की चिन्ता में ही बिता देता है। सुलैमान राजा ने आज से सैंकड़ों वर्ष पूर्व ठीक ही सवाल किया था, कि, "उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर करता है, उसको क्या प्राप्त होता है?" (सभोपदेशक १:३)। मनुष्य का सारा जीवन परिश्रम से भरा होता है। वह अपने जीवन के लिये धन-सम्पत्ति एकत्रित करना चाहता है, जमीन खरीदना चाहता है, घर बनवाना चाहता है। अर्थात् आरम्भ से अन्त तक वह अपने जीवन के लिये ही कुछ न कुछ करने में लगा रहता है। पर मनुष्य का जीवन क्या है? बाइबल में एक जगह हम यूं पढ़ते हैं:

"तुम जो यह कहते हो कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और ब्योपार करके लाभ उठाएंगे। और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा : सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या ? तुम तो मानों भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती हैं।" (याकूब ४:१३,१४)। और फिर एक दूसरी जगह बाइबल में यूं लिखा है, कि हर एक प्राणी घास के समान है और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है ; और जिस तरह घास सूख जाती है और फूल मुरझाकर झड़ जाता है, वैसे ही हर एक मनुष्य भी है। (१ पतरस१ :२४)।

प्रभु यीशु ने एक बार एक बहुत बड़ी भीड़ को आश्चर्यकर्म करके भोजने खिलाया था। वे सब लोग यीशु की सामर्थ से बड़े ही प्रभावित हुए थे। और बाइबल कहती है, कि जब दूसरे दिन उन्हें फिर से भूख लगी तो वे फिर यीशु को ढूंढ़ने लगे। और जब उन्हें यीशु मिल गया तो वे बड़े ही प्रसन्न हुए, और यीशु से पूछने लगे कि वह कहां चला गया था। पर यीशु ने उन से कहा, कि, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुमने अचम्भित काम देखे थे, परंतु तुम मुझे इसलिये ढूंढ़ते हो क्योंकि कल तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए थे। और फिर प्रभु ने उन से यूं कहा था, कि "नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परंतु उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनंत जीवन तक ठहराता है।" (यूहन्ना ६:२६,२७)।

यहां यीशु ने उनका ध्यान एक दूसरे भोजन की तरफ दिलाया था। अर्थात, आत्मिक भोजन, जो परमेश्वर के वचन को सुनने से मिलता है। एक अन्य जगह इसी बात को यीशु ने इस तरह कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परंतु हर एक उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है। (मत्ती ४:४)। और फिर बाइबल यह भी कहती है कि "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है,

अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा, और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (१ यूहन्ना २:१५-१७)।

यहां परमेश्वर के वचन की पुस्तक हमारा ध्यान एक ऐसे जीवन की ओर दिला रही है जो अनंत है और जो हमेशा बना रहेगा। और उस जीवन का भोजन है, परमेश्वर का वचन ; उसकी आज्ञाएं ; उसकी इच्छा पर चलना। वे लोग जो यीशु को ढूंढ़ रहे थे, वे उसे उस भोजन के लिये खोज रहे थे, जो उन्हें केवल वह शारीरिक जीवन ही दे सकता है जो नाशमान है ; जो भाप के समान है, और जो ज़मीन की घास के समान है । शारीरिक जीवन नाशमान है, अनिश्चित है, और केवल कुछ ही समय का है। उस से मनुष्य को कुछ लाभ नहीं होगा। परंतु फिर भी इंसान का सारा समय केवल उसी नाशमान जीवन को सुखी बनाने में और बचाने में व्यतीत हो जाता है। और जब वह इस संसार से इस जीवन को छोड़कर चला जाता है, तो वह एक कंगाल की तरह चला जाता है। एक आत्मिक कंगाल ! एक आत्मिक नंगा ! और एक आत्मिक भूखा ! क्या कभी आप ने इस बारे में सोचा है?

प्रभु यीशु ने इस संबंध में एक कहानी सुनाकर एक बार इस प्रकार कहा था, कि एक धनवान आदमी था, जो एक बहुत बड़े महल में रहता था, और मलमल के कीमती कपड़े पहनता था और बढ़िया से बढ़िया भोजन खाता था, और प्रतिदिन बड़े सुख-विलास से रहता था। और उसके घर के सामने लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ लाकर छोड़ दिया जाता था। लाज़र नंगा, भूखा, घावों से भरा हुआ वहां बैठा रहता था, और सड़क के कुत्ते आकर उसके घावों को चाटा करते थे। और जब वह धनवान खाना खा चुकता था। तो उसके बचे हुए भोजन में से उसके नौकर लाकर कुछ लाज़र को भी दे दिया करते थे। इसी तरह वक्त गुज़रता गया, और एक दिन लाज़र मर गया। कुछ समय बाद, यीशु ने कहा कि वह धनवान भी मर गया। परन्तु फिर क्या हुआ?

यीशु ने कहा, कि अधोलोक में पीड़ा में करहाते हुए उस धनवान ने दूर से लाज़र को स्वर्गलोक में देखकर यह निवदेन किया, कि लाज़र उसके पास आकर उसके मुंह में पानी की एक बूंद डाल दे, क्योंकि उसने कहा, कि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परंतु जवाब में उस धनवान से कहा गया, कि तू याद कर कि पृथ्वी पर तू ने अपना जीवन कैसे व्यतीत किया था, और जहां तू है वह उसी का फल है, और तू हमेशा यहां इसी प्रकार रहेगा। (लूका १६:१६-३१)।

यीशु की इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि पृथ्वी पर हम अपने जीवन को केवल शारीरिक और नाशमान वस्तुओं को ही प्राप्त करने में व्यतीत न कर दें, पर उन आत्मिक वस्तुओं की खोज करें जो इस जीवन के बाद भी काम आएंगी। इसीलिये यीशु ने कहा था, कि सबसे पहले तुम परमेश्वर के धर्म और राज्य की खोज करो। (मत्ती ६:३३) "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो" यीशु ने कहा था, "जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परंतु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है, वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती ६:१६-२१)

किस जीवन के लिये आज आप परिश्रम कर रहे हैं? आप की आशा क्या है? क्या आप की आशा की सीमा इसी जीवन तक है? जब आप इस जीवन को छोड़कर जाएंगे तो हमेशा के लिये अनंतकाल में आप कहां रहेंगे? क्या आप जानते हैं, कि यीशु आप को स्वर्ग में जाने के लिये हमेशा की ज़िंदगी दे सकता है? उसने कहा था, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)।

और सच्चाई यह है, कि हम में से हर एक पिता यानि परमेश्वर के पास पहुंचना चाहता है। हम में से हर एक इंसान स्वर्ग में जाना चाहता है। पर प्रभु यीशु का कहना है, कि बिना मेरे पास आए कोई भी इंसान परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। क्योंकि वह परमेश्वर का मार्ग है। वह परमेश्वर की सच्चाई

है। और उस में हमेशा का जीवन है। और सबसे प्रमुख बात यह है कि वह सारे जगत के पापों का, आपके और मेरे पापों का प्रायश्चित है।

यदि इस पुस्तक को पढ़कर आपने उद्धारकर्त्ता यीशु को अपना जीवन देने का निश्चय किया है, तो मुझे आप का पत्र पढ़कर प्रसन्नता होगी।

सनी डेविड
पोस्ट बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली ११००४६